ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानांजन शलाकया

चक्षुर उंमिलितम् येन तस्मै श्री गुरवे नमः।

श्री चैतन्य मनोभीष्टम स्थापितं येन भूतले

स्वयं रूप कदामहयं ददाति स्व पदांतिकम।।

वन्देहं श्रीगुरोः श्रीयुत पद कमलं श्रीगुरुं वैष्णवांश्च

श्रीरुपं साग्रजातम सहगण रघुनाथन्वितं तम सजीवं।

सद्वैतं सावधूतम् परिजन सहितं कृष्ण-चैतन्य-देवं

श्रीराधा-कृष्ण-पादान सहगना-लालिता श्रीविशाखानवितांश्च।।

नमः ॐ विष्णु पदाया कृष्ण प्रेष्ठाय भूतले

श्रीमते भक्तिवेदान्त स्वामिन इतिनामिने .

नमस्ते सारस्वते देवे गौर वाणी प्रचारिणे

निर्विशेष शून्यवादी पाश्चात्य देश तारिणे।।

हे कृष्ण करुणासिंधोदीनबंधो जगत्पते

गोपेश गोपिकाकान्त राधाकांत नमोस्तुते।।

तप्तकांचन गौरांगी श्रीराधे वृन्दावनेश्वरी वृषभानुसुते देवी प्रणमामि हरिप्रिये।।

वाञ्चाकल्पतरुभ्यश्च कृपासिन्धुभ्य एव च

पतितानाम पावनेभ्योवैष्णवेभ्यो नमो नमः।।

जय श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु नित्यानंद श्री अद्वैत गदाधर श्रीवासादि गौर भक्त वृंद।।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

सभी हाथ उठा कर बोलो

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

हमेंतोकुछआवाज़नहींसुनाईदेती|

लोगगूंगेहैंसभी?अरेभगवानकानामलेनेकेलिएहीतोजीभदीहै।शर्मक्योंआतीहै?बो लोजोरसेहरेकृष्णहरेकृष्णकृष्णकृष्णहरेहरेहरेरामहरेरामरामरामहरेहरे।जोनहींबो लेहैंना,उन्हेंमेंढककीतरहदूसराजन्ममिलेगा।यहांसभीवैष्णवभक्तउपस्थितहैंयह जानकरहमेंकाफीआनंदहोरहाहै।भगवानश्रीरामचंद्रजीकेबारेमेंशुकदेवगोस्वामीने परीक्षितमहाराजकोउपदेशकेरूपमेंरामजीकीलीलादर्शाते,थोड़ेहीशब्दोंमेंसारीरामा यणसमझादी।ज्यादातरलोगरामायणकापाठनौदिनतककरतेहैं।लेकिनक्यासम झआयाक्यानहींआयायेकौनपूछनेवालाहै ? कौनदेखनेवालाहै ?

उनलोगोंकेजीवनकाउद्धारइतनीबार

रामायणसुनकरतोहोहीजानाचाहिएथा।लेकिनहमज्यादातरलोगोंकोदेखतेहैंकिउ नकीभक्तिका भीविकासनहींहोरहाबल्किपीछेहटहोरहीहै।तोइतनी

बाररामायणसुननेकाफायदा हीक्याहै ? कथासुनिसुनिफूटेकान,

तोयेनाआयब्रह्मज्ञान।अरेकानभीफूटजातेहैंइतनीबार

कथासुनतेपरफिरभीभगवानकेबारेमेंकुछपतानहींचला,नतोअपनेहीजीवनमेंऐसी दिव्यताकाचमत्कारहोताहै | हमारेआत्माकास्वभावदिव्यहोतेहुएभीबहुत

दबजाताहै।उसेबहारनिकालनेकेलिएहीतोभगवानअवतारलेतेहैं।उसेबाहरनिकाल नेकेलिएहमेंभक्तिदेतेहैं।क्योंकिआत्माभगवानकाअंशहै।येशरीरतोलोंदाहै,प्रथ्वि, जल, अग्नि, वायु,

आकाशका।जोरोटीखाकरबनारहेहैंतोरोटीसेतोरोटीहीपैदाहोतीहै।आत्माथोड़ेहीरो टीसेपैदाहोसकतीहै?येशरीरभीरोटीहैजोदूसरेजीवोंकाआहारहोताहै।जीवोजीवस्य जीवनम्। sb 1:एकजीवदूसरेजीवखा

करजीनेकाआधाररखताहै।आत्माकोतोजीनेकेलिएकेवलभगवानपरआधाररखना होताहै।येआत्मातोइतनीजीवंतहोतीहैकिनिर्जीवशरीरकोभीजीवितकरतीहै।और वोजबचलीजातीहैतोशरीरनिर्जीवकानिर्जीवरहजाताहै।उसमेंनतोकुछहलनचलन होताहैन तो
वोअपनेआपकुछभीनहींकरसकता।वोतोसड़नेलगताहैजबआत्माचलीजातीहै।जब आत्मारहतीहैतोकभीसड़तीहै? सड़सकतीहै?बीमारीमेंसड़तीहैना।कुछलगाहोतो शरीरदुर्गंधमारनेलगताहै,जहाँसेखूनबहाहो।येबतानेकेलिएकियेशरीरहमनहींहैं। तोकहनेकामतलबहैकिआत्माकामूलस्वभाव
इसशरीरकीरोटीपरज्यादाआसक्तिनरखनेसेजाग्रतहोताहै।नहींतोकभीनहींहोता। हमारेजड़शरीरकोजड़इंद्रियांसिर्फअपनेकामभोगकेलिएहीजोव्यस्तरखतेहैंवोजड़ ताकेअलावाकुछप्राप्तनहींकरपाते।जीवनकेआनंदकीतोबातहीनहीं।आनंदकातोउ सकोकोईअनुभवहोहीनहींसकता।इंद्रियतृप्तिकरसकताहैलेकिनपिटाईपा करहीकरसकताहै।जितनीइंद्रियतृप्तिज्यादाउतनीमृत्युनजदीकहोतीहै।येनियम होताहै।इसनियमकोकोईभीभंगनहींकरसकता।श्रीरामचंद्रजीनेकहा , मनुष्यहमआपकोमर्यादासिखातेहैंकिहमेंकिसढंगसेमर्यादामेंरहकरउत्तमचरित्र कापालनकरनाचाहिए।परमसत्यकापालनकरनाचाहिए।परमसत्यतोभगवानहो तेहैंस्वयं।केवलवचनहीइनकेसत्यनहींबल्किअद्भुतकर्मभीइनकेसत्यहोतेहैं।और जोभक्तउनकाकहामानकरउनकीइच्छापूर्तिकेलिएजीतेहैंवोभक्तकहलातेहैं।भ क्तिहीएकमात्रऐसाकर्तव्यबनताहैजोसत्यहोताहै।बाकीध्यानभीझूठारहताहै।आ जजबहमयहाँआएतोप्रभुपादजीकाएकप्रवचनसुनरहेथे।प्रभुपादजीकहतेहैंकिमनु ष्यकोचारपुरुषार्थहासिलकरनेहोतेहैं।धर्म, अर्थ,

कामऔरमोक्ष।धर्मकीशिक्षाअवश्यप्राप्तकरनीहोतीहै।धार्मिकनियममनुष्योंकेलि एबनाएगएहैंकिवेमर्यादामेंरहें।तोधर्मसिर्फमान्यताकेलिएनहींबतायाहै।मर्यादाका पालनकरनेकेलिएधर्महै।इसलिएभगवानश्रीरामचन्द्रजीमर्यादापुरुषोत्तमबनकर आएऔरहमेंकैसेधर्मकापालनकरनाहैउसकोसिखाया।अर्थऔरकामजबधर्ममेंजो आज्ञाहै,

जोअनुशीलनजिसकोकहतेहैंहमउसकापालनकरतेहैं,नियमोंका,तोवोनियमोंकापा लनकरतेयदिहमअर्थऔरकामकीप्रवृत्तिपरनियंत्रणकरसकतेहैंतोवोभीमर्यादामेहै ।औरमर्यादामेंपालनकरतेहुएहमेंमोक्षकेप्रतिआगेबढ़नेकामौकामिलताहै।लेकिन मोक्षकेबादकीगतिमेंतोभगवानकहतेहैं-

सर्वधर्मान्परित्यज्यमाम्एकम्शरणम्व्रज।अहम्त्वाम्सर्वपापेभ्योमोक्षिष्यामिमा शुच:।। भ. गी सारेधर्मोंमेंजोजोमान्यतालेकर

व्यक्तिबैठाहैजोजोधर्मोंकेनियमयदिउसकीभक्तिमेंविकासनहींकरपातेइसलिए तू (उस

व्यक्ति)उनसबकात्यागकरकेमेरेअकेलेकीशरणागतिवालाधर्मस्वीकारकर।क्यों किमैंतुझेसत्यरूपसेकहताहूंकितुझेसारेपापोंसेमुक्तकरदूंगा।यानीकिधर्मकापाल नकरतेकरतेभीयदिहमाराविकासनहींहोतातोएसेधर्मोंकीक्याआवश्यकताहै? मनुष्यअपनीअपनीमतिसेधर्मबनाताहै।यानिकिमान्यता।मति, मन, मान्यतायेसबएकहीचीज़है।येबुद्धिकेअलावाजोजोबातेंहैंवेसबमनद्वारारचिगईहैं। जोबुद्धिकाउपयोगनहींकरताऔरमनकीधारणाओंकेअनुसारकामकरताहैऔरकि सीकीभीसुनतानहींहैचाहेभगवानभीउनकेसामनेआकरकुछकहेंतोसुनेगाभी नहीं।औरभगवानकहतेहैंकिसर्वधर्मान्परित्यज्यमाम्एकम्शरणम्व्रज।अरेचारपु

रुषार्थमेंधर्म, अर्थ,
कामऔरमोक्षकीबातकरतेहैंऔरबादमेंकहतेहैंसर्वधर्मान्परित्यज्य....
येकैसीबातहै?सहीबातबतातेहैंभगवान,किजोधर्मउसकाविकासनहींकररहाहैभक्तिकीतरफनहींलेजातातोयेसबबेकारहै।येधर्मधर्मनहींहै।धर्मकापालनयाधर्मकेकानूनोंकापालनइसीलिएकरनाचाहियेकिहममर्यादामेंरहें।जोअर्थऔरकामकिमर्यादाभीहोतीहै।हमअनियंत्रितऔरअमर्यादितइन्द्रियतृप्तिकभीनहींकरसकते।हमारीइच्छासफलनहींहोतीइससेपहलेमृत्युआजातीहै।उनकीमनकिमनमेंहीरहजातीहैऔरभूतबनकरकहींचिपकनाचाहताहै।क्योंकिअपनीइंद्रियोंकोसंतोषनहीं।इंद्रियोंकोसंतोषकबहोताहैपताहै ?
जबइंद्रियोंकेस्वामीजोभगवानहोतेहैंउनकीसेवाकरनेसेहीसंतोषहोताहै।इसलिएश्रीमदभागवतममेंप्रथमस्कंददूसरेअध्यायकेतेरहवेंश्लोकमेंयेबतायागयाहैंकिअतःपुंभिरद्विजश्रेष्ठवर्णाश्रम -विभागशःस्वनुस्थितस्यधर्मस्यसंसिद्धिरहरि -तोषणम।भगवानकासंतोष।भगवानकीतृप्तिकेलिएयदिहमअपनेअपनेगुणऔरकर्मकेविभागकेअनुसारहमाराजोसुचितकर्महैवोकरकेयदिचलतेहैंतोभगवानकोसंतोषप्राप्तहोताहै।जोभगवानकोसंतोषप्राप्तहोताहैतोउसकेअंशआत्माकोक्योंनहींप्राप्तहोगा?
भगवानबातेंकीऔरभक्तोंकीबातेंएकसरीखीहीहोनीचाहियेजोअपनेमूलस्वभावपरआनेकी।तोभगवानरामचंद्रजीकहतेहैकिमनुष्यचाहेलाखउपायकरेवोअपनाविस्तारचंद्रमायाअन्यग्रहोंपरभीक्योंनहींकरनाचाहताहैलेकिनयेसबफोकटव्यवहारहै।वोकभीसफलनहींहोता।नतोकोईचंद्रमापरगयाहैनकहींगयाहै।औरउसकेलिएतोवैज्ञानिको

कोभारीचुनौतीमिलरहीहैकिसबझूठादावाहै।औरहमलोगोंकोमूर्खबनानेकाधंधाये सरकारीतरीकेसेहोरहाहै।कहनेकामतलबहैकिमनुष्यअपनीमर्यादामेंरहकरमर्यादा काउल्लंघनकिएबिनाभगवतप्राप्तिकरसकताहै।इसलिएजोधार्मिकनियमहमेंम र्यादामेंआगेबढ़ातेनहीं,

मर्यादाकापालनकरकेहमेंभक्तिकाविकासनहींकरातेतोऐसेसारे

नियमों,धर्मोंकोछोड़नेकोकहरहेहैंभगवान।सर्वधर्मान्परित्यज्यमाम्एकम्शरण म्व्रज।यानिकिभक्तिहीधर्महै।भगवानकाधर्मभक्तिकहलातीहै।औरभगवानकीअ नुकूलतादेखकरहमेंभक्तिकाधर्मपालनकरनाहोताहै।यहनहींकिअपनीमनमानीभ क्तिकरें।तोपरीक्षितमहाराजकीइच्छाभगवानश्रीरामचंद्रजीकेउत्तमचरित्रजानने कीथीलेकिनसातदिनमेंसेपांचदिनतोबीतचुकेथे।पहलेनौस्कंदमेंभगवततत्वयानि किभगवानकापरमसत्यजाना।भगवानकीलीलाएंनोवेंस्कंदमेंशुरुहोतीहैं।दसवेंस्कं दमेंभगवानश्रीकृष्णकीलीलाऐंआऐंगीतोनोवेंस्कंदमेंभगवानरामचंद्रजीकाचरित्र आताहै।यानिकिसातदिनपरीक्षितमहाराजजीऐंगे।तोउसमेंसेपांचदिनतोबीतचुके हैंतोयेदोदिनमेंसारीकथाकैसेकरपाएंगे।औरउसकीआवश्यकताभीनहींहैक्योंकिधा र्मिकनियमोंकापालनकरतेहुएयदिहमआध्यात्मतकअपनीआत्माकोनहींपहुंचापा तेयानिकिजबविकासहोरहाहैतबजड़तापूर्वकनियमोंकापालननहींकरनाचाहियेब ल्किभगवानकीभक्तिमेंऐसेजुड़ेरहनाचाहिएकियेचौबीसघंटेकाव्यवसायबनजाए। तोऐसामनुष्ययहाँऋषिजैसेराजा महाराजपरीक्षितथेऔरशुकदेवगोस्वामीनेकहा, हेपरीक्षिततूआजतकबहुतसारीरामकथाएँबारम्बारसुनचुकाहै।रामायणभीतूबहुत बारसुनचुकाहै।अरे,

उससमयमेंभीरामायणचलतीथी।जबभागवतहोरहीहैतोभागवतमेंरामायणआरही

है।क्योंकिवैसेरामायणकीकथाबहुतकालोंसेप्रचलितहै।वोत्रेतायुगमेंथी।त्रेतायुगक रीबनएककरोड़सत्तरलाखसालकाहोताहै।जबभगवानरामचन्द्रजीकाउद्दातजीवन चरित्रहमेंमिलरहाहैतोभगवानरामचंद्रजीकेलिएशुकदेवगोस्वामीक्याकहरहेहैं? हेराजापरीक्षित,
भगवानरामचंद्रजीकेदिव्यकार्यकलापोंकावर्णनउनसाधुपुरुषोंद्वाराकियाजाताहै जिन्होंनेसत्यकादर्शनकियाहै।यानिकिजोसाधुपुरुषपरमसत्यरामजीकेबारेमेंनजा नताहो, समझानहींसकताहोतोउसकेमुखसेकथासुननेकाकोईइरादाही नहीं करना चाहिए।आजकलतो,
हेसाधु,क्यारामचरितमानसइत्यादिजोग्रंथलिखेगएउसमेंभीइतनाप्रदूषणहुआहै। कलहमनांदीमेंउसकेलिएभागवतकथाकररहेथे।तोलोगोंनेस्वीकाराहाँमहाराजस हीहै।इतनाप्रदूषणरामायणमेंघुसादियाहै।उससेक्याफायदाहै?
इसीलिएविकासनहींहोता।सबगोलमोलबातेंहोतीहैंजिनकाशास्त्रमेंकोईसंदर्भभीन हींमिलता।तोशुकदेवगोस्वामीकहतेहैंकिजिसनेसत्यकापरिचयकियाहैउसकेद्वा रासुननाचाहिए।जिससेवास्तविकलाभहो।क्योंकिआपसीतापतिरामचंद्रजीकेविष यमेंबारंबारसुनचुकेहैंइसलिएमैंसंक्षेपमेंइनकार्यकलापोंकावर्णनकरूँगा।कृपयाउसे सुनें।संक्षेपमेंयानिकिछोटेमेंकहदेनासबकुछ।वोभीसुनाने मात्रसे।वोसबजान शकतेथेलेकिनआज हम कुछनहींजान रहे है।भगवानकाएककार्यकलाप, एकसीधीसादीलीलाभीजाननेमेंहमेंतकलीफहोतीहैक्योंकिभगवानहमारेजैसेनहींहैं इसीलिए।भगवानहमारेजैसेरोटीसेबनेहुएशरीरकेनहींहैं।उनकाशरीरआध्यात्मिक होताहै।दिव्यहोताहै।सच्चिदानंदगुणोंसेभराहोताहै।हमाराअसत्,
अचितऔरनिरानंदगुणोंकाशरीरहै।उल्टाहीहै।दिखनेमेंहोताहोगासरीखालेकिनउ

नदोनोंके शरीर केस्वभावअलग
अलगहोतेहैं।तोभगवानकेदिव्यकार्यकलापोंकोहमयेऐसेशरीरवालेकैसेजानें?
उसकेलिएभक्तिकरकेअपनेइसशरीरकीस्वच्छताइत्यादिकरनीहोतीहै।पवित्रता
लानीहोतीहैताकिहमभगवानकीदिव्यताकोसमझसकें।कैसेअपनेपिताकेवचनोंको
स्वीकारा,
जोकेकयीकोदिएथेउनकोबनाएरखनेकेलिएभगवानरामचंद्रजीनेतुरंतराज्यपदछो
ड़दिया।औरअपनीधर्मपत्नीसीतादेवीकेसाथएकजंगलसेदूसरेजंगलमेंअपनेउनच
रणकमलोंसेघूमतेरहेजोइतनेकोमलथेजोसीतादेवीकीहथेलियोंकास्पर्शभीसहनन
हींकरसकतेथे।सीतादेवीतोसेवाकरनेगईंथींभगवानकीऔरभगवाननंगेपांवचलरहे
थे।खड़ाऊँलेकरनहींगएथे।खड़ाऊँतोभरतकोसौंपदिएथे।रामचंद्रजीनेकितनेकष्टउ
ठाएहोंगे।औरइनकेचरणकमल, कमलतोकितनाकोमलहोताहै,
उसकीपंखुड़ियाँकितनीसुंदरहोतीहैंऔरऐसेकमलजैसीउपमावालेभगवानकेचरण
कमलकितनेकोमलहोंगे।तोकांटेपत्थरइत्यादिलगकरक्याक्या
नहींहुआहोगा।तोभक्तिसेहमयहपहचानसकतेहैंकियहकोमलताकाभावहममेंकैसे
आए।जब मांसखाने वाले हैं, नशाबाजीकरते हैं तो
हमारेमेसेकोमलताचलीजातीहै।औरभगवानकेचरित्रकोसमझनेकीताकतहमेंनहीं
मिलती।भगवानकेचरणकमलसीताकीहथेलियोंकास्पर्शसहननहींकरपातेथे,
इतनेकोमलथे।ऐसानहींकि
रामचंद्रजीनेकुछसहननहींकिया।कहनेकामतलबहैकिइनशब्दोंमेंजोभावहैउसभा
वकीमहत्ताभक्तिकेद्वाराआतीहै।यानिकिसीतादेवीकीहथेलियोंयदिश्रीरामचन्द्र
जीकेऐसेकष्टसहनकिएहुएचरणकमलोंकोयदिस्पर्शकरतेतोभगवानकोकाफीसरा

हनाहोनीचाहियेथीकिजोकुछदर्दहैमिटजानाचाहिएथा।सीतादेवीकीहथेलियोंमेंबहुतकोमलताहोतीहैं।लेकिननहींसीताकीसेवाभीबहुतप्रामाणिकरूपसेबनीहै।फिरभीभगवानकीमहत्ताऐसीहैकिअपनेभक्त,
अपनीहीशक्तिसीतादेवीकीहथेलियोंकास्पर्शसहननहींकरपाते।कितनीकोमलताभगवानकेचरणकमलमेंबताईगयीहै।ऐसानहींकिभगवानपुरुषहैंइसलिएकठोरहृदयवालेहैं।नहींनहींभगवानकाप्रेमतोइतनामृदुहोताहैकिवोमाँऔरबापदोनोंकाकामकरतेहैं।सीताजीतोउनकीसेविकाहै।उनकीशक्तिहै।शक्तिहमेशाशक्तिमानकीसेवाकरतीहै।वोस्वतंत्रनहींरहती।चाहेसीतादेवीकितनीभीबलवानक्योंनहोलेकिनउनकीरक्षाकीआवश्यकताबनीरहीथी।औरबनीहीरहनीचाहिए।कोईस्त्रीअपनेमनमानेढंगसेयदिस्वतंत्रबननाचाहतीहैतोवोधर्मकापालननहींकरसकतीऔरनतोधर्मउसकीरक्षाकरसकताहै।तोयेउदाहरणहै।इसलिएसीतादेवीनेकभीधर्मकाउल्लंघननहींकिया।जोलक्ष्मणरेखाबनाईगईथीउसकोलांघकरचलीगईऐसाबतायाहैलेकिनवोतोमायासीताथीं।भगवानकीअंतरंगशक्तिकभीभगवानकेवचनका,
याभगवानकेसंदेशका,
याआदेशकाउल्लंघननहींकरसकती।लेकिनभगवानकीलीलामेंसाथदेनेकेलिएभगवानकीइच्छाकेअनुसारउन्होंनेलक्ष्मणरेखाकोभंगकियाथा।लेकिनउसकीवजहयेहुईकिभगवानअपनेदिव्यकार्यकलापोंकोआगेबढारहेहैं।भगवानकीशक्तिभगवानकीइच्छाकेअनुसारकामकरतीहै।भौतिकशक्तिभीभगवानकीइच्छाकेअनुसारकामकरतीहैअपनीस्वतंत्रइच्छासेनहींकरती।मयाध्यक्षेण------भ गी-
इसभौतिकजगतकीअधिष्ठात्रीदेवीदुर्गाभीभगवानकीइच्छाकेअनुसारकामकररहीहैं।उसकीजिम्मेदारीहैकिमूर्खमनुष्योंकोपीटनाहै।दुखदेनाहै।तीनप्रकारसेदुखदे

तीहै।एकआध्यात्मिकभावसे,
यानिकिखुदकीगलतीसेदुखहोताहै।दूसराकोईसगासंबंधीदेजाताहै।यानिकिदूसरे व्यक्तिकेद्वाराहोताहै।औरतीसराकुदरतीप्रकोपकेद्वारा।तोतीनोंतापत्रिशूलकेस मानहैं।इसलिएदुर्गाकेहाथमेंत्रिशूलहै।शिवजीकेपरिवारकेहाथमेंत्रिशूलहै।दूसरेपरि वारकेहाथमेंत्रिशूलनहींहोता।इनकीजिम्मेदारीहै।भगवानकीइच्छायेहैकिजोदूषित मनुष्यहैंजोअपनाधर्मनहींजानते,
सिर्फधार्मिकताकादिखावाकरतेहैंउनकोकभीऊपरनहींउठनेदेते।त्रिशूलहीपहलेजां चकरताहै।तोभगवानसीतादेवीकीहथेलियोंकास्पर्शभीसहननहींकरपातेथे।भगवा नकेसाथउनकेअनुजलक्ष्मणतथावानरोंकेराजासुग्रीवतथाहनुमानभीथे।वेजंगलमें घूमतेहुए, रामलक्ष्मणकीथकानमिटानेमेंसहायकबने।क्याभगवानथकतेहैंकभी? फिरभीभक्तकाभावहैकिमैंभगवानकीसेवाकरूँऔरथकानमिटाऊं।भगवानकोमैंकै सेराजीकरूं।शूपर्नखाकीनाकतथाकानकाटकर उसे कुरूप बना करभगवानसीतादेवीसेबिछड़गए।भगवानऔरभगवानकीशक्तिदोनोंएकदूसरेसे कभीविलगनहींहोसकती।किसीमेंइतनीताकतनहींकिदेवीसीताकोरामचंद्रजीसेअ लगकरसके।सीतादेवीकाक्रोधइतनाभयंकरहोताहैकिरावणतुरंतहीमरजाता।तोजो दृष्टिसे
हमयहांदेखसकतेहैंकिजिनकोरावणउठाकरलेगयावोअसलीसीतानहोकरमायासी तार्थी।रावणपर
भगवानसकपटकृपाकरतेहैं।उसकीइच्छापूरीकरनेदेतेहैंभगवान।सकपटयानिकु छकपटहोनाचाहिए।कपटपताहैना, cheating. तोमायादेवीकपटकरके रावण की इच्छा पूरी करने के लिएसीतादेवी का

हरणकरसकतेहैं।यानिकिरावणसमझरहाहैकि
सचमुचसीताकोउठाकरलेजारहाहैऔरवोजीतगया।रामचंद्रजीकोविरहमेंऐसेपाग
लबनादेगाऔरलड़नेआएगातोमारकरसीताकाउपभोगकरूँगा।यहीतोइच्छाथी।दु
ष्टोंकीइच्छाक्याहै?
भगवानकीशक्तिलेलूंऔरभगवानकोमारूँ।मानोउसेभगवानकीकृपाशक्तिचाहिए
भगवाननहींचाहिए।ऐसाहीदुष्टविचारकरतेहैं।मेरेघरमेंलक्षमीआएलेकिननाराय
णकीकोईआवश्यकतानहींहै।सहीहैना,
हमरावणहैं।रावणहमारेमेंहीपड़ाहै।हमेंइंद्रिय तृप्तिदेदोऔरभगवानआप side
मेंदेखाकरोहमक्याकरतेहैं।हमविषयभोगकरतेहैंऔरकहतेहैंभगवान Thank you
very much औरदखलमतकरो।ऐसाभावरावणकाहै।रावणजानताहै,
ऐसानहींकिरावणनहींजानता।पहलेभीमरचुकाहैभगवानकेहाथोंसे।यदिसीतादेवी
काइतनाक्रोधहोतातोरावणकबकामरचुकाहोता।परंतुउसनेभगवानकीइच्छाजान
करमायासीताकारूपलेलियाऔरलक्ष्मणरेखाकोभीभंगकरकेरावणकोउठालेजाने
दिया।जिससेभगवानकोउनकादिव्यचरित्रबतानेमेंसंभवहों।उनकोमौकामिलजाए
नहींतोरामायणअधूरीरहती।वोवहींखत्महोजाती।किसीतानेमारदिया।सीतामेंबहु
तताकतहै।लेकिनभगवानकासाथदेरहीहैयेउसकीभक्तिहै।भगवानकीइच्छाकेअ
नुसारभक्तभगवानकाकामकरताहै।अपनीमनमानीनहींकरता।जोभक्तनहींहैवो
अपनीइच्छाआगेरखताहै।भगवानकोसमझतानहींकिभगवानक्याकहरहेहैं।वोयह
नहींसमझताहैतो फिरभगवानकीइच्छाकोकैसेजाने? पोथीपढ़ेजगमुवा,
पंडितभयानकोय। ढाई अक्षरप्रेमकेपढ़ेतोपंडितहोय। तुलसी दास कहेते
है।यानिकिबारबाररामलीलापढ़कर भी

जबहमखत्महोजातेहैंजगमुवायानिकिसाराजगतभीखत्महोगयालेकिनकोईपंडितनहींभया।कोईपंडितनहींभयायानिकिपंडितकौनहोताहै?
जोसत्औरअसत्काविवेकजाननेवालाहोताहै।किपरमसत्यक्याहै, उसकोजाननेवालाहीपंडितहोताहै।आजकलकेपंडिततोकेवलपैसेकेलालचीहैं।वास्तवमेंभगवानकेभक्तनहींहैं।वोरावणहैं।चाहेआपमांसखातेरहो, दारूपीतेरहो, पंडितआएगाऔरकहेगा, अरेबहुतहोगया।रामायणरखोऔर रामायणपढ़ो।हनुमानजीआपकीइच्छापूरीकरेंगे।फिररामायणरखनेदेताहै।अरे, येपंडितनहींहै।भगवानकीकोईसेवानहींहैउसकी।औरनतोवोकिसीकाउद्धारकरसकताहै।भगवान बिछड़गए।भगवानकीशक्तिकभीभगवानसे बिछड़नेवालीनहींहोसकती।लेकिनयहाँभगवानसीतादेवीसेबिछड़गएहैं।तोउसकेपीछेजोभावार्थहैउसकोसमझो।अतएवहीरामचंद्रजीअपनीभौहेंतानकरक्रुद्धहुएऔर सागरकोललकारा।जिसनेभगवान को अपनेऊपरपुलबनानेकीअनुमतिदेदी।तत्पश्चातभगवानरावणकोमारनेकेलिएदावाननकीभाँतिउसकेराज्यमेंप्रविष्टहुए।ऐसेभगवानरामचंद्रहमसबकीरक्षाकरें।येएकहीश्लोकमेंसारासमझायाहै।आगेबहुतसीखनेकेलिएशुकदेवगोस्वामीबतातेहैं।तोहमआपसबसेविनतीकरतेहैंकिसिर्फपाठकेबजायअभ्यासभीकरें।पाठकरनेकाएकफलहोताहैऔरअभ्यासकादूसरा।पाठकरतेशायदपुण्यकमाओगेलेकिनयदिइंद्रियतृप्तिऔरविकास
धार्मिकनियमोंकेअनुसारनकरनेसेजैसेहाथीस्वच्छजलमेंस्नानकरताहैऔरबाहर जमीनपरआकरधूलिफेंकताहैऐसास्नानहोताहै।रामायण का पाठ करें और गलत व्यवहार रामायण के बाद करें। पाठ के बाद हम गलत व्यवहार

करते हैं। हम टाव्युनी गए थे वहाँ हमने लोगों को रामायण के बारे में समझाया, लोग हाँ हाँ करते रहे लेकिन जैसे ही हमने खत्म किया लोग कावा नामक मादक द्रव्य खांडने लगे। फट फट फट फट .....हमने पूछा ये क्या हो रहा है तो कहने लगे की ये तो यहाँ का रीति रिवाज है। हमने कहा काहे का रीति रिवाज है? किसने समझाया? कि ये करने का और वो भी मंदिर में। तो कहने का मतलब कि ये सब दूषण आता है। कोई इस ढंग से समझा जाता है कि करो। कोई दिक्कत नहीं। तब हमने जांच पड़ताल की और हमने ढूंढ निकाला कि कहाँ पे सड़ा है? तो आप ताज्जुब करोगे कि ये स्वयं तुलसी कृत रामायण में नहीं बल्कि ये समझाने वाले के लेखन में निकला। देखो तुलसीदास 1631 में रामायण रच गए। सही न। उसके बाद 1908 में कोई गोपालदास कर के पैदा हुआ यानि कि करीब सौ साल पहले। उसके पिता का नाम पूर्णदास था और वो भोजनगर का रहने वाला था। उसने रामायण का महात्म्य लिखा। उसने बहुत सारी अटपटी बातें बताईं। उसमें ये भी लिखा कि जिस पापी के घर रामायण पड़ी हो चाहे वो मांस खाता हो या शराब पीता हो उसके घर हनुमान जी चौकीदारी करेंगे और यमदूत नहीं आ सकते। ऐसा लिखा है। ये तो धर्म के विरुद्ध है धर्म के क़ानूनों के विरुद्ध है। यानि कि ऐसा लिखने वालेका न तो कोई प्रमाण है न कोई। लेकिन लिख के गया है और यह रामायण महात्म्य मे बताते है। शास्त्र के नियम के अनुसार जब ये शास्त्र रचते है उस से पहले उस का महात्म्य छप जाता है। महात्म्य पहले आता है ओर बाद मे शास्त्र बनता है। पद्म

पुराण, श्रीमद भागवत से पहले लिखा गया । पद्म पुराण मे श्रीमद भागवत का महात्म्य है । वाल्मीकि रामायण का महात्म्य भी अन्य शास्त्रो मे लिखा गया है । सही। लेकिन वो कहेते है की ये वही वाल्मीकि जो त्रेता युग मे हो गए थे कलयुग मे तुलसी दास बन कर आए ओर फिर से दूसरा रामायण करने के लिए । ऐसा लिखा है महात्म्य मे। और वो भी तुलसी दास जी के चले जाने के बाद उसका महात्म्य लिखा। यानि कि तुलसीदास जी से भी ये महात्म्य लिखने वाला ज्यादा अकलमंद होना चाहिए। जो ये गैरंटी देता रहे कि जिस के घर मे मांस पकता है, शराब पीते है, ऐसे पापी के घर मे यदि रामायण पड़ी हो तो, पढता है या नहीं पढता, वो तो बाद कि बात है लेकिन जिस के घर रामायण पड़ी हो उसके के घर हनुमान जी चौकीदारी करेंगे, क्या हनुमान जी नौकर हैं? पापी के घर क्या चोकीदारी करने आते है? यदि भक्त हो तो हम मान भी सकते हैं। पापी कोई भक्त नहीं हो सकता। पापी जब पाप छोड़ कर भगवान के शरणागत होता है तब भगवान उसे स्वीकारते हैं। अपीचेत्सु दुराचारो भजते माम अनन्य भाक.. ये भगवत गीता मे दृष्टि है। इसिलिए जब पाप वृति रहती है और रामायण भी चालू रहता है तो ये जल, रामायण के स्वच्छ जल मे स्नान कर कर हम फिर से विषय वासना कि धुले फेंकते है तो हम गंदे के गंदे ही रहेंगे। भगवान को हम उसकी तरफ पहुँच ही नहीं पाएंगे, तो चौकीदारी कि बात ही क्या? यमदूत नहीं आएंगे तो जाएंगे कहाँ? तो अजामिल कि कहानी उसने लिखी है जो श्रीमद भगवातम मे आती है। तो अजामिल का

वृत्तांत कह कर ये तुलसीदास कि रामायण के लिए भी ऐसा चरित्र निरुपण किया है। कि एक पापी था उसके घर में रामायण पड़ी थी। लेकिन मरते समय उसके यहाँ आए हैं यमदूत उसे ले जाने के लिए। लेकिन तुरंत ही रामायण का प्रभाव उसके घर में था इसलिए विष्णु दूत आए और उसको डांट मारी कि खबरदार यमदूत तुम्हारा अधिकार नहीं है। इसके घर में रामायण पड़ी है। तो वे यमदूत घबरा के अपने मालिक यमराज के पास गए। यमदेवता भी काफी घबराने लगा। ओह, उसके घर मत जाओ। हमें अधिकार नहीं है। उसके घर रामायण पड़ी है। ऐसी महत्ता बताने वाला न तो कुछ धर्म जानता है न ही भक्ति जानता है। यदि जिस धर्म में भक्ति कि छींट भी न हो तो वो धर्म नहीं है। छल धर्म, उपधर्म, विधर्म, कूट धर्म, ये सब कैटव धर्म केहलाते हैं। विशुद्ध शास्त्र में जहां भक्ति का ही निरुपण है, वहाँ ऐसे धर्मों कि बात नहीं आती। उसे तो छोडने को कहा है। भगवद गीता में भगवान अंतिम उपदेश देकर गए अर्जुन को। सर्वधर्मान परित्यज्य मामेकम शरनम व्रज। हे अर्जुन सारी मान्यताओं को छोड़ कर मेरे अकेले कि शरण में आ। जो भगवान कि शरण नहीं देता वो कोई धर्म नहीं है। भगवान का धर्म भगवान की शरण दिलाने वाला ही होना चाहिए। मान्यता का धर्म नहीं है। क्योंकि भगवान गौरंटी देते हैं की सारे पापों से मुक्ति कर देंगे और ये पापी बना रहना चाहता है। तो कैसे बन सकता है। और जहां भगवद गीता खतम हुई वहाँ शुरू होती है श्रीमद भगवतम की धर्मोप्रजित कैटव ..... इस धर्म पुस्तक में सारे कैटव धर्म यानि की cheating religions

जिसको भगवान give up करने को कह रहे है। उनको मारो गोली। यहाँ कुछ नहीं मिलेगा। ऐसा। ये एक विशुद्ध शास्त्र है। जहां सिर्फ भगवान के प्रेम पाने की बात जो मोक्षके बादकी बात है। तो मनुष्य को चार पुरुषार्थ में धार्मिकता का अंत भक्ति में आता है। धर्म के पालन का अर्थ भक्ति करना। भक्ति ही एकमात्र धर्म है। जहां भक्ति नहीं दिखावा है तो कुछ सड़ा ही होगा। उसे दूर करने के लिए भगवान का नाम, यश, कीर्तन इत्यादि करना चाहिए। इसलिए, बोलो दिल खोल के, हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे, हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। इसमें कोई खर्चा हुआ? कुछ नहीं हुआ। लेकिन भक्ति की शुरुआत हो जाएगी। लेकिन नियमित रूप से आप माला करो। एक बार जो भगवान का नाम लेता है वो पापी भी वैष्णव कहलाता है। लेकिन सच्चा वैष्णव नहीं झूठा वैष्णव कहलाता है। वैष्णव प्रायः तो पाप छोड़ देता है फिर भी भगवान का नाम नहीं लेता है तो भगवान से ईर्ष्या चालू रहती है। लेकिन जो नियमित रूप से नाम लेता है वो आदर्श बन सकता है। नियम, यानि की मर्यादा। संकल्प और नियम दोनों साथ साथ में ऐसा काम करता है जो बुद्धि का विषय है। मनोधर्म का विषय नहीं है। हमें बुद्धि का उपयोग करना है। तो, बुद्धि से यदि हम संकल्प करें और रोज़ हम चार माला से शुरुआत करेंगे हरे कृष्ण महामंत्र का जप करेंगे और अपनी भक्ति आगे बढ़ाने का प्रयत्न करेंगे। बोलो मंजूर है? तब हम इतने दूरसे भी बारंबार आया करेंगे। और आगे आगे सारी रामायण खतम करेंगे। लेकिन एक श्लोक में यदि हम इतना समय लेते हैं तो नौ दिन तो हमें बहुत कम

पड़ेंगे। लेकिन कहा है। नष्टप्रायेशु अभद्रेशु नित्यं भागवत सेवया। जो नित्यं भागवत , भगवान का पुस्तक भागवत या रामायण या भक्तों की नित्या सेवा करता है तो भगवती उत्तम श्लोके, भक्तिर भवति नैष्ठिकी। भगवान की कृष्ण या रामचंद्र दोनों में कोई अंतर नहीं। उसमे नैष्ठिकी भक्ति पैदा होगी। नैष्ठिकी यानि ये भक्ति कभी गिराने वाली नहीं है। निष्ठा पूर्वक हम आगे बढ़ कर हम भगवादधाम पहुँचने के लिए हम सक्षम बनते हैं। नित्यं भागवत सेवया। हर रोज कम से कम आप लोग चार माला से शुरू करो। करेंगे? क्या विचार है? हमें वापस बुलाना है? माता जी अरे आप तो बोलती ही नहीं कोई। अरे जबर्दस्ती से कोई बुलाता है? हम जबर्दस्ती नहीं करते लेकिन स्पष्ट बात करते हैं। हम भगवान को राजी करने का प्रयत्न करते हैं। क्योंकि भक्ति में तो भगवान को राजी ही करना है। एक को यदि राजी कर लो तो सारी दुनिया राजी हो जाएगी। एक को संतोष दो तो सारी दुनिया को संतोष हो जाएगा। एक को भी नहीं कर सकते तो किसको करेंगे। किसी को नहीं कर पाते। लेकिन एक मुख्य जो हैं भगवान, जिसके लिए अपना जीवन बना है , हर एक जीव भगवान का अंश है। तो जीवन उनसे है तो पहली ज़िम्मेदारी भगवान को राजी करने की है। बच्चा पैदा होता है तो माँ बाप उसको जब बाहर निकालते हैं तो सर्वप्रथम भगवान के दर्शन को ले आते हैं। क्योंकि उसका है उसकी अमानत है भूल जाये तो ये उसकी बेवकूफी है। ये नाता कभी भुलाया नहीं जा सकता। आप सभी धार्मिक पुरुष हैं, लेकिन इन धार्मिक नियमों का पालन कर के हम

अपनी भक्ति को आगे बढ़ाने का प्रयत्न करें। एक एक अकेले अकेले नहीं कर पाएंगे। लेकिन समूह में ही कर सकते हैं। जैसे यहाँ समूह में कितना बढ़िया आयोजन किया है। यहाँ एकत्र मिल कर इतने कोने में भी भक्ति का भाव बताते हैं लेकिन बताना और वास्तविक प्रगति करने में बहुत अंतर होता है। हम यहाँ बैठे बैठे भी भगवान के पास पाहुच सकते हैं। भारत ही जाना है ऐसा नहीं है। तो भक्ति का जो उपाय है उसको आप अपनाओ और हरे कृष्ण महामंत्र कम से कम चार माला से शुरू करो। हम कम से कम सोलह माला तक लोगों को उत्साह देते हैं क्योंकि बाकी के आठ घंटे देखो कितने भगवान की याद में जाएँगे। तो ये दस घंटे का हिसाब बाकी चोदह घंटे आपका । लेकिन इससे जीवन सफल बन जाएगा। तो कंजूस मत रहिए। दिल खोल कर भगवान का नाम लेने के लिए आप तैयारी कीजिये। आपने माला दी है इन लोगों को? अरे बाप रे! आप प्रेसिडेंट साहब को पूछ रहे हैं? कंजूस मत रहिए। माला दो। तो वो भी कंजूस नहीं रहेंगे भगवान का नाम लेने में। सही न। तो कितने लोग माला करते हैं? हाथ को ऊंचा करो , अरे वाह ! ये तो छुपे रुस्तम हैं सभी एक, दो, तीन चार...। भाइयों नाक कटेगी जरा हाथ तो ऊंचा करो। चलो कितने करेंगे? अभी हाथ ऊंचा करो। वाह एक, दो,..... और कितने करेंगे भगवान के नाम का जप? एक, दो,..... चलेचलो। सब कंजूस हैं। क्यों? क्या खर्चा हो जाएगा? हमें कुछ नहीं चाहिए। हम सामने से दे सकते हैं। लेकिन भगवान के नाम के लिए ही देंगे। भगवान नहीं चाहिए?

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानांजन शलाकया

चक्षुर उंमिलितम् येन तस्मै श्री गुरवे नमः।

श्री चैतन्य मनोभीष्टम स्थापितं येन भूतले

स्वयं रूप कदामहयं ददाति स्व पदांतिकम।।

वन्देहं श्रीगुरोः श्रीयुत पद कमलं श्रीगुरुं वैष्णवांश्च

श्रीरुपं साग्रजातम सहगण रघुनाथन्वितं तम सजीवं ।

सद्वैतं सावधूतम् परिजन सहितं कृष्ण-चैतन्य-देवं

श्रीराधा-कृष्ण-पादान सहगना-लालिता श्रीविशाखानवितांश्च ।।

नमः ॐ विष्णु पदाया कृष्ण प्रेष्ठाय भूतले

श्रीमते भक्तिवेदान्त स्वामिन इतिनामिने .

नमस्ते सारस्वते देवे गौर वाणी प्रचारिणे

निर्विशेष शून्यवादी पाश्चात्य देश तारिणे।।

हे कृष्ण करुणासिंधोदीनबंधो जगत्पते

गोपेश गोपिकाकान्त राधाकांत नमोस्तुते।।

तप्तकांचन गौरांगी श्रीराधे वृन्दावनेश्वरी वृषभानुसुते देवी प्रणमामि हरिप्रिये।।

वाञ्चाकल्पतरुभ्यश्च कृपासिन्धुभ्य एव च

पतितानाम पावनेभ्योवैष्णवेभ्यो नमो नमः।।

जय श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु नित्यानंद श्री अद्वैत गदाधर श्रीवासादि गौर भक्त वृंद।।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

सभी हाथ उठा कर बोलो

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

हमेंतोकुछआवाज़नहींसुनाईदेती|

लोगगूंगेहैंसभी?अरेभगवानकानामलेनेकेलिएहीतोजीभदीहै।शर्मक्योंआतीहै?बो लोजोरसेहरेकृष्णहरेकृष्णकृष्णकृष्णहरेहरेहरेरामहरेरामरामरामहरेहरे।जोनहींबो लेहैंना,उन्हेंमेंढककीतरहदूसराजन्ममिलेगा।यहांसभीवैष्णवभक्तउपस्थितहैंयह जानकरहमेंकाफीआनंदहोरहाहै।भगवानश्रीरामचंद्रजीकेबारेमेंशुकदेवगोस्वामीने परीक्षितमहाराजकोउपदेशकेरूपमेंरामजीकीलीलादर्शाते,थोड़ेहीशब्दोंमेंसारीरामा यणसमझादी।ज्यादातरलोगरामायणकापाठनौदिनतककरतेहैं।लेकिनक्यासम झआयाक्यानहींआयायेकौनपूछनेवालाहै ? कौनदेखनेवालाहै ?

उनलोगोंकेजीवनकाउद्धारइतनीबार

रामायणसुनकरतोहोहीजानाचाहिएथा।लेकिनहमज्यादातरलोगोंकोदेखतेहैंकिउ नकीभक्तिका भीविकासनहींहोरहाबल्किपीछेहटहोरहीहै।तोइतनी

बाररामायणसुननेकाफायदा हीक्याहै ? कथासुनिसुनिफूटेकान,

तोयेनाआयब्रह्मज्ञान।अरेकानभीफूटजातेहैंइतनीबार

कथासुनतेपरफिरभीभगवानकेबारेमेंकुछपतानहींचला,नतोअपनेहीजीवनमेंऐसी दिव्यताकाचमत्कारहोताहै | हमारेआत्माकास्वभावदिव्यहोतेहुएभीबहुत

दबजाताहै।उसेबहारनिकालनेकेलिएहीतोभगवानअवतारलेतेहैं।उसेबाहरनिकाल नेकेलिएहमेंभक्तिदेतेहैं।क्योंकिआत्माभगवानकाअंशहै।येशरीरतोलोंदाहै,प्रथ्वि, जल, अग्नि, वायु,

आकाशका।जोरोटीखाकरबनारहेहैंतोरोटीसेतोरोटीहीपैदाहोतीहै।आत्माथोड़ेहीरो टीसेपैदाहोसकतीहै?येशरीरभीरोटीहैजोदूसरेजीवोंकाआहारहोताहै।जीवोजीवस्य जीवनम्। sb 1:एकजीवदूसरेजीवखा

करजीनेकाआधाररखताहै।आत्माकोतोजीनेकेलिएकेवलभगवानपरआधाररखना होताहै।येआत्मातोइतनीजीवंतहोतीहैकिनिर्जीवशरीरकोभीजीवितकरतीहै।और वोजबचलीजातीहैतोशरीरनिर्जीवकानिर्जीवरहजाताहै।उसमेंनतोकुछहलनचलन होताहैन तो
वोअपनेआपकुछभीनहींकरसकता।वोतोसड़नेलगताहैजबआत्माचलीजातीहै।जब आत्मारहतीहैतोकभीसड़तीहै? सड़सकतीहै?बीमारीमेंसड़तीहैना।कुछलगाहोतो शरीरदुर्गंधमारनेलगताहै,जहाँसेखूनबहाहो।येबतानेकेलिएकियेशरीरहमनहींहैं। तोकहनेकामतलबहैकिआत्माकामूलस्वभाव
इसशरीरकीरोटीपरज्यादाआसक्तिनरखनेसेजाग्रतहोताहै।नहींतोकभीनहींहोता। हमारेजड़शरीरकोजड़इंद्रियांसिर्फअपनेकामभोगकेलिएहीजोव्यस्तरखतेहैंवोजड़ ताकेअलावाकुछप्राप्तनहींकरपाते।जीवनकेआनंदकीतोबातहीनहीं।आनंदकातोउ सकोकोईअनुभवहोहीनहींसकता।इंद्रियतृप्तिकरसकताहैलेकिनपिटाईपा करहीकरसकताहै।जितनीइंद्रियतृप्तिज्यादाउतनीमृत्युनजदीकहोतीहै।येनियम होताहै।इसनियमकोकोईभीभंगनहींकरसकता।श्रीरामचंद्रजीनेकहा , मनुष्यहमआपकोमर्यादासिखातेहैंकिहमेंकिसढंगसेमर्यादामेंरहकरउत्तमचरित्र कापालनकरनाचाहिए।परमसत्यकापालनकरनाचाहिए।परमसत्यतोभगवानहो तेहैंस्वयं।केवलवचनहीइनकेसत्यनहींबल्किअद्भुतकर्मभीइनकेसत्यहोतेहैं।और जोभक्तउनकाकहामानकरउनकीइच्छापूर्तिकेलिएजीतेहैंवोभक्तकहलातेहैं।भ क्तिहीएकमात्रऐसाकर्तव्यबनताहैजोसत्यहोताहै।बाकीध्यानभीझूठारहताहै।आ जजबहमयहाँआएतोप्रभुपादजीकाएकप्रवचनसुनरहेथे।प्रभुपादजीकहतेहैंकिमनु ष्यकोचारपुरुषार्थहासिलकरनेहोतेहैं।धर्म, अर्थ,

कामऔरमोक्ष।धर्मकीशिक्षाअवश्यप्राप्तकरनीहोतीहै।धार्मिकनियममनुष्योंकेलि एबनाएगएहैंकिवेमर्यादामेंरहें।तोधर्मसिर्फमान्यताकेलिएनहींबतायाहै।मर्यादाका पालनकरनेकेलिएधर्महै।इसलिएभगवानश्रीरामचन्द्रजीमर्यादापुरुषोत्तमबनकर आएऔरहमेंकैसेधर्मकापालनकरनाहैउसकोसिखाया।अर्थऔरकामजबधर्ममेंजो आज्ञाहै,

जोअनुशीलनजिसकोकहतेहैंहमउसकापालनकरतेहैं,नियमोंका,तोवोनियमोंकापा लनकरतेयदिहमअर्थऔरकामकीप्रवृत्तिपरनियंत्रणकरसकतेहैंतोवोभीमर्यादामेहै ।औरमर्यादामेंपालनकरतेहुएहमेंमोक्षकेप्रतिआगेबढ़नेकामौकामिलताहै।लेकिन मोक्षकेबादकीगतिमेंतोभगवानकहतेहैं-

सर्वधर्मान्परित्यज्यमाम्एकम्शरणम्व्रज।अहम्त्वाम्सर्वपापेभ्योमोक्षिष्यामिमा शुच:।। भ. गी सारेधर्मोंमेंजोजोमान्यतालेकर

व्यक्तिबैठाहैजोजोधर्मोंकेनियमयदिउसकीभक्तिमेंविकासनहींकरपातेइसलिए तू (उस

व्यक्ति)उनसबकात्यागकरकेमेरेअकेलेकीशरणागतिवालाधर्मस्वीकारकर।क्यों किमैंतुझेसत्यरूपसेकहताहूंकितुझेसारेपापोंसेमुक्तकरदूंगा।यानीकिधर्मकापाल नकरतेकरतेभीयदिहमाराविकासनहींहोतातोएसेधर्मोंकीक्याआवश्यकताहै? मनुष्यअपनीअपनीमतिसेधर्मबनाताहै।यानिकिमान्यता।मति, मन, मान्यतायेसबएकहीचीज़है।येबुद्धिकेअलावाजोजोबातेंहैंवेसबमनद्वारारचिगईहैं। जोबुद्धिकाउपयोगनहींकरताऔरमनकीधारणाओंकेअनुसारकामकरताहैऔरकि सीकीभीसुनतानहींहैचाहेभगवानभीउनकेसामनेआकरकुछकहेंतोसुनेगाभी नहीं।औरभगवानकहतेहैंकिसर्वधर्मान्परित्यज्यमाम्एकम्शरणम्व्रज।अरेचारपु

रुषार्थमेंधर्म, अर्थ,
कामऔरमोक्षकीबातकरतेहैंऔरबादमेंकहतेहैंसर्वधर्मान्परित्यज्य....
येकैसीबातहै?सहीबातबतातेहैंभगवान,किजोधर्मउसकाविकासनहींकररहाहैभक्तिकीतरफनहींलेजातातोयेसबबेकारहै।येधर्मधर्मनहींहै।धर्मकापालनयाधर्मकेकानूनोंकापालनइसीलिएकरनाचाहियेकिहममर्यादामेंरहें।जोअर्थऔरकामकिमर्यादाभीहोतीहै।हमअनियंत्रितऔरअमर्यादितइन्द्रियतृप्तिकभीनहींकरसकते।हमारीइच्छासफलनहींहोतीइससेपहलेमृत्युआजातीहै।उनकीमनकिमनमेंहीरहजातीहैऔरभूतबनकरकहींचिपकनाचाहताहै।क्योंकिअपनीइंद्रियोंकोसंतोषनहीं।इंद्रियोंकोसंतोषकबहोताहैपताहै ?
जबइंद्रियोंकेस्वामीजोभगवानहोतेहैंउनकीसेवाकरनेसेहीसंतोषहोताहै।इसलिएश्रीमदभागवतममेंप्रथमस्कंददूसरेअध्यायकेतेरहवेंश्लोकमेंयेबतायागयाहैंकिअतःपुंभिरद्विजश्रेष्ठवर्णाश्रम -विभागशःस्वनुस्थितस्यधर्मस्यसंसिद्धिरहरि -तोषणम।भगवानकासंतोष।भगवानकीतृप्तिकेलिएयदिहमअपनेअपनेगुणऔरकर्मकेविभागकेअनुसारहमाराजोसुचितकर्महैवोकरकेयदिचलतेहैंतोभगवानकोसंतोषप्राप्तहोताहै।जोभगवानकोसंतोषप्राप्तहोताहैतोउसकेअंशआत्माकोक्योंनहींप्राप्तहोगा?
भगवानबातेंकीऔरभक्तोंकीबातेंएकसरीखीहीहोनीचाहियेजोअपनेमूलस्वभावपरआनेकी।तोभगवानरामचंद्रजीकहतेहैकिमनुष्यचाहेलाखउपायकरेवोअपनाविस्तारचंद्रमायाअन्यग्रहोंपरभीक्योंनहींकरनाचाहताहैलेकिनयेसबफोकटव्यवहारहै।वोकभीसफलनहींहोता।नतोकोईचंद्रमापरगयाहैनकहींगयाहै।औरउसकेलिएतोवैज्ञानिको

कोभारीचुनौतीमिलरहीहैकिसबझूठादावाहै।औरहमलोगोंकोमूर्खबनानेकाधंधाये सरकारीतरीकेसेहोरहाहै।कहनेकामतलबहैकिमनुष्यअपनीमर्यादामेंरहकरमर्यादा काउल्लंघनकिएबिनाभगवतप्राप्तिकरसकताहै।इसलिएजोधार्मिकनियमहमेंम र्यादामेंआगेबढ़ातेनहीं,

मर्यादाकापालनकरकेहमेंभक्तिकाविकासनहींकरातेतोऐसेसारे

नियमों,धर्मोंकोछोड़नेकोकहरहेहैंभगवान।सर्वधर्मान्परित्यज्यमाम्एकम्शरण म्व्रज।यानिकिभक्तिहीधर्महै।भगवानकाधर्मभक्तिकहलातीहै।औरभगवानकीअ नुकूलतादेखकरहमेंभक्तिकाधर्मपालनकरनाहोताहै।यहनहींकिअपनीमनमानीभ क्तिकरें।तोपरीक्षितमहाराजकीइच्छाभगवानश्रीरामचंद्रजीकेउत्तमचरित्रजानने कीथीलेकिनसातदिनमेंसेपांचदिनतोबीतचुकेथे।पहलेनौस्कंदमेंभगवततत्वयानि किभगवानकापरमसत्यजाना।भगवानकीलीलाएंनोवेंस्कंदमेंशुरुहोतीहैं।दसवेंस्कं दमेंभगवानश्रीकृष्णकीलीलाऐंआऐंगीतोनोवेंस्कंदमेंभगवानरामचंद्रजीकाचरित्र आताहै।यानिकिसातदिनपरीक्षितमहाराजजीऐंगे।तोउसमेंसेपांचदिनतोबीतचुके हैंतोयेदोदिनमेंसारीकथाकैसेकरपाएंगे।औरउसकीआवश्यकताभीनहींहैक्योंकिधा र्मिकनियमोंकापालनकरतेहुएयदिहमआध्यात्मतकअपनीआत्माकोनहींपहुंचापा तेयानिकिजबविकासहोरहाहैतबजड़तापूर्वकनियमोंकापालननहींकरनाचाहियेब ल्किभगवानकीभक्तिमेंऐसेजुड़ेरहनाचाहिएकियेचौबीसघंटेकाव्यवसायबनजाए। तोऐसामनुष्ययहाँऋषिजैसेराजा महाराजपरीक्षितथेऔरशुकदेवगोस्वामीनेकहा, हेपरीक्षिततूआजतकबहुतसारीरामकथाएँबारम्बारसुनचुकाहै।रामायणभीतूबहुत बारसुनचुकाहै।अरे,

उससमयमेंभीरामायणचलतीथी।जबभागवतहोरहीहैतोभागवतमेंरामायणआरही

है।क्योंकिवैसेरामायणकीकथाबहुतकालोंसेप्रचलितहै।वोत्रेतायुगमेंथी।त्रेतायुगक रीबनएककरोड़सत्तरलाखसालकाहोताहै।जबभगवानरामचन्द्रजीकाउद्दातजीवन चरित्रहमेंमिलरहाहैतोभगवानरामचंद्रजीकेलिएशुकदेवगोस्वामीक्याकहरहेहैं? हेराजापरीक्षित,
भगवानरामचंद्रजीकेदिव्यकार्यकलापोंकावर्णनउनसाधुपुरुषोंद्वाराकियाजाताहै जिन्होंनेसत्यकादर्शनकियाहै।यानिकिजोसाधुपुरुषपरमसत्यरामजीकेबारेमेंनजा नताहो, समझानहींसकताहोतोउसकेमुखसेकथासुननेकाकोईइरादाही नहीं करना चाहिए।आजकलतो,
हेसाधु,क्यारामचरितमानसइत्यादिजोग्रंथलिखेगएउसमेंभीइतनाप्रदूषणहुआहै। कलहमनांदीमेंउसकेलिएभागवतकथाकररहेथे।तोलोगोंनेस्वीकाराहाँमहाराजस हीहै।इतनाप्रदूषणरामायणमेंघुसादियाहै।उससेक्याफायदाहै?
इसीलिएविकासनहींहोता।सबगोलमोलबातेंहोतीहैंजिनकाशास्त्रमेंकोईसंदर्भभीन हींमिलता।तोशुकदेवगोस्वामीकहतेहैंकिजिसनेसत्यकापरिचयकियाहैउसकेद्वा रासुननाचाहिए।जिससेवास्तविकलाभहो।क्योंकिआपसीतापतिरामचंद्रजीकेविष यमेंबारंबारसुनचुकेहैंइसलिएमैंसंक्षेपमेंइनकार्यकलापोंकावर्णनकरूँगा।कृपयाउसे सुनें।संक्षेपमेंयानिकिछोटेमेंकहदेनासबकुछ।वोभीसुनाने मात्रसे।वोसबजान शकतेथेलेकिनआज हम कुछनहींजान रहे है।भगवानकाएककार्यकलाप, एकसीधीसादीलीलाभीजाननेमेंहमेंतकलीफहोतीहैक्योंकिभगवानहमारेजैसेनहींहैं इसीलिए।भगवानहमारेजैसेरोटीसेबनेहुएशरीरकेनहींहैं।उनकाशरीरआध्यात्मिक होताहै।दिव्यहोताहै।सच्चिदानंदगुणोंसेभराहोताहै।हमाराअसत्,
अचितऔरनिरानंदगुणोंकाशरीरहै।उल्टाहीहै।दिखनेमेंहोताहोगासरीखालेकिनउ

नदोनोंके शरीर केस्वभावअलग
अलगहोतेहैं।तोभगवानकेदिव्यकार्यकलापोंकोहमयेऐसेशरीरवालेकैसेजानें?
उसकेलिएभक्तिकरकेअपनेइसशरीरकीस्वच्छताइत्यादिकरनीहोतीहै।पवित्रता
लानीहोतीहैताकिहमभगवानकीदिव्यताकोसमझसकें।कैसेअपनेपिताकेवचनोंको
स्वीकारा,
जोकेकयीकोदिएथेउनकोबनाएरखनेकेलिएभगवानरामचंद्रजीनेतुरंतराज्यपदछो
ड़दिया।औरअपनीधर्मपत्नीसीतादेवीकेसाथएकजंगलसेदूसरेजंगलमेंअपनेउनच
रणकमलोंसेघूमतेरहेजोइतनेकोमलथेजोसीतादेवीकीहथेलियोंकास्पर्शभीसहनन
हींकरसकतेथे।सीतादेवीतोसेवाकरनेगईंथींभगवानकीऔरभगवाननंगेपांवचलरहे
थे।खड़ाऊँलेकरनहींगएथे।खड़ाऊँतोभरतकोसौंपदिएथे।रामचंद्रजीनेकितनेकष्टउ
ठाएहोंगे।औरइनकेचरणकमल, कमलतोकितनाकोमलहोताहै,
उसकीपंखुड़ियाँकितनीसुंदरहोतीहैंऔरऐसेकमलजैसीउपमावालेभगवानकेचरण
कमलकितनेकोमलहोंगे।तोकांटेपत्थरइत्यादिलगकरक्याक्या
नहींहुआहोगा।तोभक्तिसेहमयहपहचानसकतेहैंकियहकोमलताकाभावहममेंकैसे
आए।जब मांसखाने वाले हैं, नशाबाजीकरते हैं तो
हमारेमेसेकोमलताचलीजातीहै।औरभगवानकेचरित्रकोसमझनेकीताकतहमेंनहीं
मिलती।भगवानकेचरणकमलसीताकीहथेलियोंकास्पर्शसहननहींकरपातेथे,
इतनेकोमलथे।ऐसानहींकि
रामचंद्रजीनेकुछसहननहींकिया।कहनेकामतलबहैकिइनशब्दोंमेंजोभावहैउसभा
वकीमहत्ताभक्तिकेद्वाराआतीहै।यानिकिसीतादेवीकीहथेलियोंयदिश्रीरामचन्द्र
जीकेऐसेकष्टसहनकिएहुएचरणकमलोंकोयदिस्पर्शकरतेतोभगवानकोकाफीसरा

हनाहोनीचाहियेथीकिजोकुछदर्दहैमिटजानाचाहिएथा।सीतादेवीकीहथेलियोंमेंबहुतकोमलताहोतीहैं।लेकिननहींसीताकीसेवाभीबहुतप्रामाणिकरूपसेबनीहै।फिरभीभगवानकीमहत्ताऐसीहैकिअपनेभक्त,
अपनीहीशक्तिसीतादेवीकीहथेलियोंकास्पर्शसहननहींकरपाते।कितनीकोमलताभगवानकेचरणकमलमेंबताईगयीहै।ऐसानहींकिभगवानपुरुषहैंइसलिएकठोरहृदयवालेहैं।नहींनहींभगवानकाप्रेमतोइतनामृदुहोताहैकिवोमाँऔरबापदोनोंकाकामकरतेहैं।सीताजीतोउनकीसेविकाहै।उनकीशक्तिहै।शक्तिहमेशाशक्तिमानकीसेवाकरतीहै।वोस्वतंत्रनहींरहती।चाहेसीतादेवीकितनीभीबलवानक्योंनहोलेकिनउनकीरक्षाकीआवश्यकताबनीरहीथी।औरबनीहीरहनीचाहिए।कोईस्त्रीअपनेमनमानेढंगसेयदिस्वतंत्रबननाचाहतीहैतोवोधर्मकापालननहींकरसकतीऔरनतोधर्मउसकीरक्षाकरसकताहै।तोयेउदाहरणहै।इसलिएसीतादेवीनेकभीधर्मकाउल्लंघननहींकिया।जोलक्ष्मणरेखाबनाईगईथीउसकोलांघकरचलीगईऐसाबतायाहैलेकिनवोतोमायासीताथीं।भगवानकीअंतरंगशक्तिकभीभगवानकेवचनका,
याभगवानकेसंदेशका,
याआदेशकाउल्लंघननहींकरसकती।लेकिनभगवानकीलीलामेंसाथदेनेकेलिएभगवानकीइच्छाकेअनुसारउन्होंनेलक्ष्मणरेखाकोभंगकियाथा।लेकिनउसकीवजहयेहुईकिभगवानअपनेदिव्यकार्यकलापोंकोआगेबढारहेहैं।भगवानकीशक्तिभगवानकीइच्छाकेअनुसारकामकरतीहै।भौतिकशक्तिभीभगवानकीइच्छाकेअनुसारकामकरतीहैअपनीस्वतंत्रइच्छासेनहींकरती।मयाध्यक्षेण------भ गी-
इसभौतिकजगतकीअधिष्ठात्रीदेवीदुर्गाभीभगवानकीइच्छाकेअनुसारकामकररहीहैं।उसकीजिम्मेदारीहैकिमूर्खमनुष्योंकोपीटनाहै।दुखदेनाहै।तीनप्रकारसेदुखदे

तीहै।एकआध्यात्मिकभावसे,
यानिकिखुदकीगलतीसेदुखहोताहै।दूसराकोईसगासंबंधीदेजाताहै।यानिकिदूसरे व्यक्तिकेद्वाराहोताहै।औरतीसराकुदरतीप्रकोपकेद्वारा।तोतीनोंतापत्रिशूलकेस मानहैं।इसलिएदुर्गाकेहाथमेंत्रिशूलहै।शिवजीकेपरिवारकेहाथमेंत्रिशूलहै।दूसरेपरि वारकेहाथमेंत्रिशूलनहींहोता।इनकीजिम्मेदारीहै।भगवानकीइच्छायेहैकिजोदूषित मनुष्यहैंजोअपनाधर्मनहींजानते,
सिर्फधार्मिकताकादिखावाकरतेहैंउनकोकभीऊपरनहींउठनेदेते।त्रिशूलहीपहलेजां चकरताहै।तोभगवानसीतादेवीकीहथेलियोंकास्पर्शभीसहननहींकरपातेथे।भगवा नकेसाथउनकेअनुजलक्ष्मणतथावानरोंकेराजासुग्रीवतथाहनुमानभीथे।वेजंगलमें घूमतेहुए, रामलक्ष्मणकीथकानमिटानेमेंसहायकबने।क्याभगवानथकतेहैंकभी? फिरभीभक्तकाभावहैकिमैंभगवानकीसेवाकरूँऔरथकानमिटाऊं।भगवानकोमैंकै सेराजीकरूं।शूपर्नखाकीनाकतथाकानकाटकर उसे कुरूप बना करभगवानसीतादेवीसेबिछड़गए।भगवानऔरभगवानकीशक्तिदोनोंएकदूसरेसे कभीविलगनहींहोसकती।किसीमेंइतनीताकतनहींकिदेवीसीताकोरामचंद्रजीसेअ लगकरसके।सीतादेवीकाक्रोधइतनाभयंकरहोताहैकिरावणतुरंतहीमरजाता।तोजो दृष्टिसे
हमयहांदेखसकतेहैंकिजिनकोरावणउठाकरलेगयावोअसलीसीतानहोकरमायासी तार्थी।रावणपर
भगवानसकपटकृपाकरतेहैं।उसकीइच्छापूरीकरनेदेतेहैंभगवान।सकपटयानिकु छकपटहोनाचाहिए।कपटपताहैना, cheating. तोमायादेवीकपटकरके रावण की इच्छा पूरी करने के लिएसीतादेवी का

हरणकरसकतेहैं।यानिकिरावणसमझरहाहैकि
सचमुचसीताकोउठाकरलेजारहाहैऔरवोजीतगया।रामचंद्रजीकोविरहमेंऐसेपाग
लबनादेगाऔरलड़नेआएगातोमारकरसीताकाउपभोगकरूँगा।यहीतोइच्छाथी।दु
ष्टोंकीइच्छाक्याहै?
भगवानकीशक्तिलेलूंऔरभगवानकोमारूँ।मानोउसेभगवानकीकृपाशक्तिचाहिए
भगवाननहींचाहिए।ऐसाहीदुष्टविचारकरतेहैं।मेरेघरमेंलक्षमीआएलेकिननाराय
णकीकोईआवश्यकतानहींहै।सहीहैना,
हमरावणहैं।रावणहमारेमेंहीपड़ाहै।हमेंइंद्रिय तृप्तिदेदोऔरभगवानआप side
मेंदेखाकरोहमक्याकरतेहैं।हमविषयभोगकरतेहैंऔरकहतेहैंभगवान Thank you
very much औरदखलमतकरो।ऐसाभावरावणकाहै।रावणजानताहै,
ऐसानहींकिरावणनहींजानता।पहलेभीमरचुकाहैभगवानकेहाथोंसे।यदिसीतादेवी
काइतनाक्रोधहोतातोरावणकबकामरचुकाहोता।परंतुउसनेभगवानकीइच्छाजान
करमायासीताकारूपलेलियाऔरलक्ष्मणरेखाकोभीभंगकरकेरावणकोउठालेजाने
दिया।जिससेभगवानकोउनकादिव्यचरित्रबतानेमेंसंभवहों।उनकोमौकामिलजाए
नहींतोरामायणअधूरीरहती।वोवहींखत्महोजाती।किसीतानेमारदिया।सीतामेंबहु
तताकतहै।लेकिनभगवानकासाथदेरहीहैयेउसकीभक्तिहै।भगवानकीइच्छाकेअ
नुसारभक्तभगवानकाकामकरताहै।अपनीमनमानीनहींकरता।जोभक्तनहींहैवो
अपनीइच्छाआगेरखताहै।भगवानकोसमझतानहींकिभगवानक्याकहरहेहैं।वोयह
नहींसमझताहैतो फिरभगवानकीइच्छाकोकैसेजाने? पोथीपढ़ेजगमुवा,
पंडितभयानकोय। ढाई अक्षरप्रेमकेपढ़ेतोपंडितहोय। तुलसी दास कहेते
है।यानिकिबारबाररामलीलापढ़कर भी

जबहमखत्महोजातेहैंजगमुवायानिकिसाराजगतभीखत्महोगयालेकिनकोईपंडितनहींभया।कोईपंडितनहींभयायानिकिपंडितकौनहोताहै?
जोसत्औरअसत्काविवेकजाननेवालाहोताहै।किपरमसत्यक्याहै, उसकोजाननेवालाहीपंडितहोताहै।आजकलकेपंडिततोकेवलपैसेकेलालचीहैं।वास्तवमेंभगवानकेभक्तनहींहैं।वोरावणहैं।चाहेआपमांसखातेरहो, दारूपीतेरहो, पंडितआएगाऔरकहेगा, अरेबहुतहोगया।रामायणरखोऔर रामायणपढ़ो।हनुमानजीआपकीइच्छापूरीकरेंगे।फिररामायणरखनेदेताहै।अरे, येपंडितनहींहै।भगवानकीकोईसेवानहींहैउसकी।औरनतोवोकिसीकाउद्धारकरसकताहै।भगवान बिछड़गए।भगवानकीशक्तिकभीभगवानसे बिछड़नेवालीनहींहोसकती।लेकिनयहाँभगवानसीतादेवीसेबिछड़गएहैं।तोउसकेपीछेजोभावार्थहैउसकोसमझो।अतएवहीरामचंद्रजीअपनीभौहेंतानकरक्रुद्धहुएऔर सागरकोललकारा।जिसनेभगवान को अपनेऊपरपुलबनानेकीअनुमतिदेदी।तत्पश्चातभगवानरावणकोमारनेकेलिएदावाननकीभाँतिउसकेराज्यमेंप्रविष्टहुए।ऐसेभगवानरामचंद्रहमसबकीरक्षाकरें।येएकहीश्लोकमेंसारासमझायाहै।आगेबहुतसीखनेकेलिएशुकदेवगोस्वामीबतातेहैं।तोहमआपसबसेविनतीकरतेहैंकिसिर्फपाठकेबजायअभ्यासभीकरें।पाठकरनेकाएकफलहोताहैऔरअभ्यासकादूसरा।पाठकरतेशायदपुण्यकमाओगेलेकिनयदिइंद्रियतृप्तिऔरविकास
धार्मिकनियमोंकेअनुसारनकरनेसेजैसेहाथीस्वच्छजलमेंस्नानकरताहैऔरबाहर जमीनपरआकरधूलिफेंकताहैऐसास्नानहोताहै।रामायण का पाठ करें और गलत व्यवहार रामायण के बाद करें। पाठ के बाद हम गलत व्यवहार

करते हैं। हम टाव्युनी गए थे वहाँ हमने लोगों को रामायण के बारे में समझाया, लोग हाँ हाँ करते रहे लेकिन जैसे ही हमने खत्म किया लोग कावा नामक मादक द्रव्य खांडने लगे। फट फट फट फट .....हमने पूछा ये क्या हो रहा है तो कहने लगे की ये तो यहाँ का रीति रिवाज है। हमने कहा काहे का रीति रिवाज है? किसने समझाया? कि ये करने का और वो भी मंदिर में। तो कहने का मतलब कि ये सब दूषण आता है। कोई इस ढंग से समझा जाता है कि करो। कोई दिक्कत नहीं। तब हमने जांच पड़ताल की और हमने ढूंढ निकाला कि कहाँ पे सड़ा है? तो आप ताज्जुब करोगे कि ये स्वयं तुलसी कृत रामायण में नहीं बल्कि ये समझाने वाले के लेखन में निकला। देखो तुलसीदास 1631 में रामायण रच गए। सही न। उसके बाद 1908 में कोई गोपालदास कर के पैदा हुआ यानि कि करीब सौ साल पहले। उसके पिता का नाम पूर्णदास था और वो भोजनगर का रहने वाला था। उसने रामायण का महात्म्य लिखा। उसने बहुत सारी अटपटी बातें बताईं। उसमें ये भी लिखा कि जिस पापी के घर रामायण पड़ी हो चाहे वो मांस खाता हो या शराब पीता हो उसके घर हनुमान जी चौकीदारी करेंगे और यमदूत नहीं आ सकते। ऐसा लिखा है। ये तो धर्म के विरुद्ध है धर्म के क़ानूनों के विरुद्ध है। यानि कि ऐसा लिखने वालेका न तो कोई प्रमाण है न कोई। लेकिन लिख के गया है और यह रामायण महात्म्य मे बताते है। शास्त्र के नियम के अनुसार जब ये शास्त्र रचते है उस से पहले उस का महात्म्य छप जाता है। महात्म्य पहले आता है ओर बाद मे शास्त्र बनता है। पद्म

पुराण, श्रीमद भागवत से पहले लिखा गया । पद्म पुराण मे श्रीमद भागवत का महात्म्य है । वाल्मीकि रामायण का महात्म्य भी अन्य शास्त्रो मे लिखा गया है । सही। लेकिन वो कहेते है की ये वही वाल्मीकि जो त्रेता युग मे हो गए थे कलयुग मे तुलसी दास बन कर आए ओर फिर से दूसरा रामायण करने के लिए । ऐसा लिखा है महात्म्य मे। और वो भी तुलसी दास जी के चले जाने के बाद उसका महात्म्य लिखा। यानि कि तुलसीदास जी से भी ये महात्म्य लिखने वाला ज्यादा अकलमंद होना चाहिए। जो ये गैरंटी देता रहे कि जिस के घर मे मांस पकता है, शराब पीते है, ऐसे पापी के घर मे यदि रामायण पड़ी हो तो, पढता है या नहीं पढता, वो तो बाद कि बात है लेकिन जिस के घर रामायण पड़ी हो उसके के घर हनुमान जी चौकीदारी करेंगे, क्या हनुमान जी नौकर हैं? पापी के घर क्या चोकीदारी करने आते है? यदि भक्त हो तो हम मान भी सकते हैं। पापी कोई भक्त नहीं हो सकता। पापी जब पाप छोड़ कर भगवान के शरणागत होता है तब भगवान उसे स्वीकारते हैं। अपीचेत्सु दुराचारो भजते माम अनन्य भाक.. ये भगवत गीता मे दृष्टि है। इसिलिए जब पाप वृति रहती है और रामायण भी चालू रहता है तो ये जल, रामायण के स्वच्छ जल मे स्नान कर कर हम फिर से विषय वासना कि धुले फेंकते है तो हम गंदे के गंदे ही रहेंगे। भगवान को हम उसकी तरफ पहुँच ही नहीं पाएंगे, तो चौकीदारी कि बात ही क्या? यमदूत नहीं आएंगे तो जाएंगे कहाँ? तो अजामिल कि कहानी उसने लिखी है जो श्रीमद भगवातम मे आती है। तो अजामिल का

वृत्तांत कह कर ये तुलसीदास कि रामायण के लिए भी ऐसा चरित्र निरुपण किया है। कि एक पापी था उसके घर में रामायण पड़ी थी। लेकिन मरते समय उसके यहाँ आए हैं यमदूत उसे ले जाने के लिए। लेकिन तुरंत ही रामायण का प्रभाव उसके घर में था इसलिए विष्णु दूत आए और उसको डांट मारी कि खबरदार यमदूत तुम्हारा अधिकार नहीं है। इसके घर में रामायण पड़ी है। तो वे यमदूत घबरा के अपने मालिक यमराज के पास गए। यमदेवता भी काफी घबराने लगा। ओह, उसके घर मत जाओ। हमें अधिकार नहीं है। उसके घर रामायण पड़ी है। ऐसी महत्ता बताने वाला न तो कुछ धर्म जानता है न ही भक्ति जानता है। यदि जिस धर्म में भक्ति कि छींट भी न हो तो वो धर्म नहीं है। छल धर्म, उपधर्म, विधर्म, कूट धर्म, ये सब कैटव धर्म केहलाते हैं। विशुद्ध शास्त्र में जहां भक्ति का ही निरुपण है, वहाँ ऐसे धर्मों कि बात नहीं आती। उसे तो छोडने को कहा है। भगवद गीता में भगवान अंतिम उपदेश देकर गए अर्जुन को। सर्वधर्मान परित्यज्य मामेकम शरनम व्रज। हे अर्जुन सारी मान्यताओं को छोड़ कर मेरे अकेले कि शरण में आ। जो भगवान कि शरण नहीं देता वो कोई धर्म नहीं है। भगवान का धर्म भगवान की शरण दिलाने वाला ही होना चाहिए। मान्यता का धर्म नहीं है। क्योंकि भगवान गौरंटी देते हैं की सारे पापों से मुक्ति कर देंगे और ये पापी बना रहना चाहता है। तो कैसे बन सकता है। और जहां भगवद गीता खतम हुई वहाँ शुरू होती है श्रीमद भगवतम की धर्मोप्रजित कैटव ..... इस धर्म पुस्तक में सारे कैटव धर्म यानि की cheating religions

जिसको भगवान give up करने को कह रहे है। उनको मारो गोली। यहाँ कुछ नहीं मिलेगा। ऐसा। ये एक विशुद्ध शास्त्र है। जहां सिर्फ भगवान के प्रेम पाने की बात जो मोक्षके बादकी बात है। तो मनुष्य को चार पुरुषार्थ में धार्मिकता का अंत भक्ति में आता है। धर्म के पालन का अर्थ भक्ति करना। भक्ति ही एकमात्र धर्म है। जहां भक्ति नहीं दिखावा है तो कुछ सड़ा ही होगा। उसे दूर करने के लिए भगवान का नाम, यश, कीर्तन इत्यादि करना चाहिए। इसलिए, बोलो दिल खोल के, हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे, हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। इसमें कोई खर्चा हुआ? कुछ नहीं हुआ। लेकिन भक्ति की शुरुआत हो जाएगी। लेकिन नियमित रूप से आप माला करो। एक बार जो भगवान का नाम लेता है वो पापी भी वैष्णव कहलाता है। लेकिन सच्चा वैष्णव नहीं झूठा वैष्णव कहलाता है। वैष्णव प्रायः तो पाप छोड़ देता है फिर भी भगवान का नाम नहीं लेता है तो भगवान से ईर्ष्या चालू रहती है। लेकिन जो नियमित रूप से नाम लेता है वो आदर्श बन सकता है। नियम, यानि की मर्यादा। संकल्प और नियम दोनों साथ साथ में ऐसा काम करता है जो बुद्धि का विषय है। मनोधर्म का विषय नहीं है। हमें बुद्धि का उपयोग करना है। तो, बुद्धि से यदि हम संकल्प करें और रोज़ हम चार माला से शुरुआत करेंगे हरे कृष्ण महामंत्र का जप करेंगे और अपनी भक्ति आगे बढ़ाने का प्रयत्न करेंगे। बोलो मंजूर है? तब हम इतने दूरसे भी बारंबार आया करेंगे। और आगे आगे सारी रामायण खतम करेंगे। लेकिन एक श्लोक में यदि हम इतना समय लेते हैं तो नौ दिन तो हमें बहुत कम

पड़ेंगे। लेकिन कहा है। नष्टप्रायेशु अभद्रेशु नित्यं भागवत सेवया। जो नित्यं भागवत , भगवान का पुस्तक भागवत या रामायण या भक्तों की नित्या सेवा करता है तो भगवती उत्तम श्लोके, भक्तिर भवति नैष्ठिकी। भगवान की कृष्ण या रामचंद्र दोनों में कोई अंतर नहीं। उसमे नैष्ठिकी भक्ति पैदा होगी। नैष्ठिकी यानि ये भक्ति कभी गिराने वाली नहीं है। निष्ठा पूर्वक हम आगे बढ़ कर हम भगवादधाम पहुँचने के लिए हम सक्षम बनते हैं। नित्यं भागवत सेवया। हर रोज कम से कम आप लोग चार माला से शुरू करो। करेंगे? क्या विचार है? हमें वापस बुलाना है? माता जी अरे आप तो बोलती ही नहीं कोई। अरे जबर्दस्ती से कोई बुलाता है? हम जबर्दस्ती नहीं करते लेकिन स्पष्ट बात करते हैं। हम भगवान को राजी करने का प्रयत्न करते हैं। क्योंकि भक्ति में तो भगवान को राजी ही करना है। एक को यदि राजी कर लो तो सारी दुनिया राजी हो जाएगी। एक को संतोष दो तो सारी दुनिया को संतोष हो जाएगा। एक को भी नहीं कर सकते तो किसको करेंगे। किसी को नहीं कर पाते। लेकिन एक मुख्य जो हैं भगवान, जिसके लिए अपना जीवन बना है , हर एक जीव भगवान का अंश है। तो जीवन उनसे है तो पहली ज़िम्मेदारी भगवान को राजी करने की है। बच्चा पैदा होता है तो माँ बाप उसको जब बाहर निकालते हैं तो सर्वप्रथम भगवान के दर्शन को ले आते हैं। क्योंकि उसका है उसकी अमानत है भूल जाये तो ये उसकी बेवकूफी है। ये नाता कभी भुलाया नहीं जा सकता। आप सभी धार्मिक पुरुष हैं, लेकिन इन धार्मिक नियमों का पालन कर के हम

अपनी भक्ति को आगे बढ़ाने का प्रयत्न करें। एक एक अकेले अकेले नहीं कर पाएंगे। लेकिन समूह में ही कर सकते हैं। जैसे यहाँ समूह में कितना बढ़िया आयोजन किया है। यहाँ एकत्र मिल कर इतने कोने में भी भक्ति का भाव बताते हैं लेकिन बताना और वास्तविक प्रगति करने में बहुत अंतर होता है। हम यहाँ बैठे बैठे भी भगवान के पास पाहुच सकते हैं। भारत ही जाना है ऐसा नहीं है। तो भक्ति का जो उपाय है उसको आप अपनाओ और हरे कृष्ण महामंत्र कम से कम चार माला से शुरू करो। हम कम से कम सोलह माला तक लोगों को उत्साह देते हैं क्योंकि बाकी के आठ घंटे देखो कितने भगवान की याद में जाएँगे। तो ये दस घंटे का हिसाब बाकी चोदह घंटे आपका । लेकिन इससे जीवन सफल बन जाएगा। तो कंजूस मत रहिए। दिल खोल कर भगवान का नाम लेने के लिए आप तैयारी कीजिये। आपने माला दी है इन लोगों को? अरे बाप रे! आप प्रेसिडेंट साहब को पूछ रहे हैं? कंजूस मत रहिए। माला दो। तो वो भी कंजूस नहीं रहेंगे भगवान का नाम लेने में। सही न। तो कितने लोग माला करते हैं? हाथ को ऊंचा करो , अरे वाह ! ये तो छुपे रुस्तम हैं सभी एक, दो, तीन चार...। भाइयों नाक कटेगी जरा हाथ तो ऊंचा करो। चलो कितने करेंगे? अभी हाथ ऊंचा करो। वाह एक, दो,..... और कितने करेंगे भगवान के नाम का जप? एक, दो,..... चलेचलो। सब कंजूस हैं। क्यों? क्या खर्चा हो जाएगा? हमें कुछ नहीं चाहिए। हम सामने से दे सकते हैं। लेकिन भगवान के नाम के लिए ही देंगे। भगवान नहीं चाहिए?

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानांजन शलाकया

चक्षुर उंमिलितम् येन तस्मै श्री गुरवे नमः।

श्री चैतन्य मनोभीष्टम स्थापितं येन भूतले

स्वयं रूप कदामहयं ददाति स्व पदांतिकम।।

वन्देहं श्रीगुरोः श्रीयुत पद कमलं श्रीगुरुं वैष्णवांश्च

श्रीरुपं साग्रजातम सहगण रघुनाथन्वितं तम सजीवं ।

सद्वैतं सावधूतम् परिजन सहितं कृष्ण-चैतन्य-देवं

श्रीराधा-कृष्ण-पादान सहगना-लालिता श्रीविशाखानवितांश्च ।।

नमः ॐ विष्णु पदाया कृष्ण प्रेष्ठाय भूतले

श्रीमते भक्तिवेदान्त स्वामिन इतिनामिने .

नमस्ते सारस्वते देवे गौर वाणी प्रचारिणे

निर्विशेष शून्यवादी पाश्चात्य देश तारिणे।।

हे कृष्ण करुणासिंधोदीनबंधो जगत्पते

गोपेश गोपिकाकान्त राधाकांत नमोस्तुते।।

तप्तकांचन गौरांगी श्रीराधे वृन्दावनेश्वरी वृषभानुसुते देवी प्रणमामि हरिप्रिये।।

वाञ्चाकल्पतरुभ्यश्च कृपासिन्धुभ्य एव च

पतितानाम पावनेभ्योवैष्णवेभ्यो नमो नमः।।

जय श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु नित्यानंद श्री अद्वैत गदाधर श्रीवासादि गौर भक्त वृंद।।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

सभी हाथ उठा कर बोलो

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

हमेंतोकुछआवाज़नहींसुनाईदेती|

लोगगूंगेहैंसभी?अरेभगवानकानामलेनेकेलिएहीतोजीभदीहै।शर्मक्योंआतीहै?बो लोजोरसेहरेकृष्णहरेकृष्णकृष्णकृष्णहरेहरेहरेरामहरेरामरामरामहरेहरे।जोनहींबो लेहैंना,उन्हेंमेंढककीतरहदूसराजन्ममिलेगा।यहांसभीवैष्णवभक्तउपस्थितहैंयह जानकरहमेंकाफीआनंदहोरहाहै।भगवानश्रीरामचंद्रजीकेबारेमेंशुकदेवगोस्वामीने परीक्षितमहाराजकोउपदेशकेरूपमेंरामजीकीलीलादर्शाते,थोड़ेहीशब्दोंमेंसारीरामा यणसमझादी।ज्यादातरलोगरामायणकापाठनौदिनतककरतेहैं।लेकिनक्यासम झआयाक्यानहींआयायेकौनपूछनेवालाहै ? कौनदेखनेवालाहै ?

उनलोगोंकेजीवनकाउद्धारइतनीबार

रामायणसुनकरतोहोहीजानाचाहिएथा।लेकिनहमज्यादातरलोगोंकोदेखतेहैंकिउ नकीभक्तिका भीविकासनहींहोरहाबल्किपीछेहटहोरहीहै।तोइतनी

बाररामायणसुननेकाफायदा हीक्याहै ? कथासुनिसुनिफूटेकान,

तोयेनाआयब्रह्मज्ञान।अरेकानभीफूटजातेहैंइतनीबार

कथासुनतेपरफिरभीभगवानकेबारेमेंकुछपतानहींचला,नतोअपनेहीजीवनमेंऐसी दिव्यताकाचमत्कारहोताहै | हमारेआत्माकास्वभावदिव्यहोतेहुएभीबहुत

दबजाताहै।उसेबहारनिकालनेकेलिएहीतोभगवानअवतारलेतेहैं।उसेबाहरनिकाल नेकेलिएहमेंभक्तिदेतेहैं।क्योंकिआत्माभगवानकाअंशहै।येशरीरतोलोंदाहै,प्रथ्वि, जल, अग्नि, वायु,

आकाशका।जोरोटीखाकरबनारहेहैंतोरोटीसेतोरोटीहीपैदाहोतीहै।आत्माथोड़ेहीरो टीसेपैदाहोसकतीहै?येशरीरभीरोटीहैजोदूसरेजीवोंकाआहारहोताहै।जीवोजीवस्य जीवनम्। sb 1:एकजीवदूसरेजीवखा

करजीनेकाआधाररखताहै।आत्माकोतोजीनेकेलिएकेवलभगवानपरआधाररखना होताहै।येआत्मातोइतनीजीवंतहोतीहैकिनिर्जीवशरीरकोभीजीवितकरतीहै।और वोजबचलीजातीहैतोशरीरनिर्जीवकानिर्जीवरहजाताहै।उसमेंनतोकुछहलनचलन होताहैन तो
वोअपनेआपकुछभीनहींकरसकता।वोतोसड़नेलगताहैजबआत्माचलीजातीहै।जब आत्मारहतीहैतोकभीसड़तीहै? सड़सकतीहै?बीमारीमेंसड़तीहैना।कुछलगाहोतो शरीरदुर्गंधमारनेलगताहै,जहाँसेखूनबहाहो।येबतानेकेलिएकियेशरीरहमनहींहैं। तोकहनेकामतलबहैकिआत्माकामूलस्वभाव
इसशरीरकीरोटीपरज्यादाआसक्तिनरखनेसेजाग्रतहोताहै।नहींतोकभीनहींहोता। हमारेजड़शरीरकोजड़इंद्रियांसिर्फअपनेकामभोगकेलिएहीजोव्यस्तरखतेहैंवोजड़ ताकेअलावाकुछप्राप्तनहींकरपाते।जीवनकेआनंदकीतोबातहीनहीं।आनंदकातोउ सकोकोईअनुभवहोहीनहींसकता।इंद्रियतृप्तिकरसकताहैलेकिनपिटाईपा करहीकरसकताहै।जितनीइंद्रियतृप्तिज्यादाउतनीमृत्युनजदीकहोतीहै।येनियम होताहै।इसनियमकोकोईभीभंगनहींकरसकता।श्रीरामचंद्रजीनेकहा , मनुष्यहमआपकोमर्यादासिखातेहैंकिहमेंकिसढंगसेमर्यादामेंरहकरउत्तमचरित्र कापालनकरनाचाहिए।परमसत्यकापालनकरनाचाहिए।परमसत्यतोभगवानहो तेहैंस्वयं।केवलवचनहीइनकेसत्यनहींबल्किअद्भुतकर्मभीइनकेसत्यहोतेहैं।और जोभक्तउनकाकहामानकरउनकीइच्छापूर्तिकेलिएजीतेहैंवोभक्तकहलातेहैं।भ क्तिहीएकमात्रऐसाकर्तव्यबनताहैजोसत्यहोताहै।बाकीध्यानभीझूठारहताहै।आ जजबहमयहाँआएतोप्रभुपादजीकाएकप्रवचनसुनरहेथे।प्रभुपादजीकहतेहैंकिमनु ष्यकोचारपुरुषार्थहासिलकरनेहोतेहैं।धर्म, अर्थ,

कामऔरमोक्ष।धर्मकीशिक्षाअवश्यप्राप्तकरनीहोतीहै।धार्मिकनियममनुष्योंकेलि एबनाएगएहैंकिवेमर्यादामेंरहें।तोधर्मसिर्फमान्यताकेलिएनहींबतायाहै।मर्यादाका पालनकरनेकेलिएधर्महै।इसलिएभगवानश्रीरामचन्द्रजीमर्यादापुरुषोत्तमबनकर आएऔरहमेंकैसेधर्मकापालनकरनाहैउसकोसिखाया।अर्थऔरकामजबधर्ममेंजो आज्ञाहै,

जोअनुशीलनजिसकोकहतेहैंहमउसकापालनकरतेहैं,नियमोंका,तोवोनियमोंकापा लनकरतेयदिहमअर्थऔरकामकीप्रवृत्तिपरनियंत्रणकरसकतेहैंतोवोभीमर्यादामेहै ।औरमर्यादामेंपालनकरतेहुएहमेंमोक्षकेप्रतिआगेबढ़नेकामौकामिलताहै।लेकिन मोक्षकेबादकीगतिमेंतोभगवानकहतेहैं-

सर्वधर्मान्परित्यज्यमाम्एकम्शरणम्व्रज।अहम्त्वाम्सर्वपापेभ्योमोक्षिष्यामिमा शुच:।। भ. गी सारेधर्मोंमेंजोजोमान्यतालेकर

व्यक्तिबैठाहैजोजोधर्मोंकेनियमयदिउसकीभक्तिमेंविकासनहींकरपातेइसलिए तू (उस

व्यक्ति)उनसबकात्यागकरकेमेरेअकेलेकीशरणागतिवालाधर्मस्वीकारकर।क्यों किमैंतुझेसत्यरूपसेकहताहूंकितुझेसारेपापोंसेमुक्तकरदूंगा।यानीकिधर्मकापाल नकरतेकरतेभीयदिहमाराविकासनहींहोतातोएसेधर्मोंकीक्याआवश्यकताहै? मनुष्यअपनीअपनीमतिसेधर्मबनाताहै।यानिकिमान्यता।मति, मन, मान्यतायेसबएकहीचीज़है।येबुद्धिकेअलावाजोजोबातेंहैंवेसबमनद्वारारचिगईहैं। जोबुद्धिकाउपयोगनहींकरताऔरमनकीधारणाओंकेअनुसारकामकरताहैऔरकि सीकीभीसुनतानहींहैचाहेभगवानभीउनकेसामनेआकरकुछकहेंतोसुनेगाभी नहीं।औरभगवानकहतेहैंकिसर्वधर्मान्परित्यज्यमाम्एकम्शरणम्व्रज।अरेचारपु

रुषार्थमेंधर्म, अर्थ,
कामऔरमोक्षकीबातकरतेहैंऔरबादमेंकहतेहैंसर्वधर्मान्परित्यज्य....
येकैसीबातहै?सहीबातबतातेहैंभगवान,किजोधर्मउसकाविकासनहींकररहाहैभक्तिकीतरफनहींलेजातातोयेसबबेकारहै।येधर्मधर्मनहींहै।धर्मकापालनयाधर्मकेकानूनोंकापालनइसीलिएकरनाचाहियेकिहममर्यादामेंरहें।जोअर्थऔरकामकिमर्यादाभीहोतीहै।हमअनियंत्रितऔरअमर्यादितइन्द्रियतृप्तिकभीनहींकरसकते।हमारीइच्छासफलनहींहोतीइससेपहलेमृत्युआजातीहै।उनकीमनकिमनमेंहीरहजातीहैऔरभूतबनकरकहींचिपकनाचाहताहै।क्योंकिअपनीइंद्रियोंकोसंतोषनहीं।इंद्रियोंकोसंतोषकबहोताहैपताहै ?
जबइंद्रियोंकेस्वामीजोभगवानहोतेहैंउनकीसेवाकरनेसेहीसंतोषहोताहै।इसलिएश्रीमदभागवतममेंप्रथमस्कंददूसरेअध्यायकेतेरहवेंश्लोकमेंयेबतायागयाहैंकिअतःपुंभिरद्विजश्रेष्ठवर्णाश्रम -विभागशःस्वनुस्थितस्यधर्मस्यसंसिद्धिरहरि -तोषणम।भगवानकासंतोष।भगवानकीतृप्तिकेलिएयदिहमअपनेअपनेगुणऔरकर्मकेविभागकेअनुसारहमाराजोसुचितकर्महैवोकरकेयदिचलतेहैंतोभगवानकोसंतोषप्राप्तहोताहै।जोभगवानकोसंतोषप्राप्तहोताहैतोउसकेअंशआत्माकोक्योंनहींप्राप्तहोगा?
भगवानबातेंकीऔरभक्तोंकीबातेंएकसरीखीहीहोनीचाहियेजोअपनेमूलस्वभावपरआनेकी।तोभगवानरामचंद्रजीकहतेहैकिमनुष्यचाहेलाखउपायकरेवोअपनाविस्तारचंद्रमायाअन्यग्रहोंपरभीक्योंनहींकरनाचाहताहैलेकिनयेसबफोकटव्यवहारहै।वोकभीसफलनहींहोता।नतोकोईचंद्रमापरगयाहैनकहींगयाहै।औरउसकेलिएतोवैज्ञानिको

कोभारीचुनौतीमिलरहीहैकिसबझूठादावाहै।औरहमलोगोंकोमूर्खबनानेकाधंधाये सरकारीतरीकेसेहोरहाहै।कहनेकामतलबहैकिमनुष्यअपनीमर्यादामेंरहकरमर्यादा काउल्लंघनकिएबिनाभगवतप्राप्तिकरसकताहै।इसलिएजोधार्मिकनियमहमेंम र्यादामेंआगेबढ़ातेनहीं,

मर्यादाकापालनकरकेहमेंभक्तिकाविकासनहींकरातेतोऐसेसारे

नियमों,धर्मोंकोछोड़नेकोकहरहेहैंभगवान।सर्वधर्मान्परित्यज्यमाम्एकम्शरण म्व्रज।यानिकिभक्तिहीधर्महै।भगवानकाधर्मभक्तिकहलातीहै।औरभगवानकीअ नुकूलतादेखकरहमेंभक्तिकाधर्मपालनकरनाहोताहै।यहनहींकिअपनीमनमानीभ क्तिकरें।तोपरीक्षितमहाराजकीइच्छाभगवानश्रीरामचंद्रजीकेउत्तमचरित्रजानने कीथीलेकिनसातदिनमेंसेपांचदिनतोबीतचुकेथे।पहलेनौस्कंदमेंभगवततत्वयानि किभगवानकापरमसत्यजाना।भगवानकीलीलाएंनोवेंस्कंदमेंशुरुहोतीहैं।दसवेंस्कं दमेंभगवानश्रीकृष्णकीलीलाऐंआऐंगीतोनोवेंस्कंदमेंभगवानरामचंद्रजीकाचरित्र आताहै।यानिकिसातदिनपरीक्षितमहाराजजीऐंगे।तोउसमेंसेपांचदिनतोबीतचुके हैंतोयेदोदिनमेंसारीकथाकैसेकरपाएंगे।औरउसकीआवश्यकताभीनहींहैक्योंकिधा र्मिकनियमोंकापालनकरतेहुएयदिहमआध्यात्मतकअपनीआत्माकोनहींपहुंचापा तेयानिकिजबविकासहोरहाहैतबजड़तापूर्वकनियमोंकापालननहींकरनाचाहियेब ल्किभगवानकीभक्तिमेंऐसेजुड़ेरहनाचाहिएकियेचौबीसघंटेकाव्यवसायबनजाए। तोऐसामनुष्ययहाँऋषिजैसेराजा महाराजपरीक्षितथेऔरशुकदेवगोस्वामीनेकहा, हेपरीक्षिततूआजतकबहुतसारीरामकथाएँबारम्बारसुनचुकाहै।रामायणभीतूबहुत बारसुनचुकाहै।अरे,

उससमयमेंभीरामायणचलतीथी।जबभागवतहोरहीहैतोभागवतमेंरामायणआरही

है।क्योंकिवैसेरामायणकीकथाबहुतकालोंसेप्रचलितहै।वोत्रेतायुगमेंथी।त्रेतायुगक रीबनएककरोड़सत्तरलाखसालकाहोताहै।जबभगवानरामचन्द्रजीकाउद्दातजीवन चरित्रहमेंमिलरहाहैतोभगवानरामचंद्रजीकेलिएशुकदेवगोस्वामीक्याकहरहेहैं? हेराजापरीक्षित,
भगवानरामचंद्रजीकेदिव्यकार्यकलापोंकावर्णनउनसाधुपुरुषोंद्वाराकियाजाताहै जिन्होंनेसत्यकादर्शनकियाहै।यानिकिजोसाधुपुरुषपरमसत्यरामजीकेबारेमेंनजा नताहो, समझानहींसकताहोतोउसकेमुखसेकथासुननेकाकोईइरादाही नहीं करना चाहिए।आजकलतो,
हेसाधु,क्यारामचरितमानसइत्यादिजोग्रंथलिखेगएउसमेंभीइतनाप्रदूषणहुआहै। कलहमनांदीमेंउसकेलिएभागवतकथाकररहेथे।तोलोगोंनेस्वीकाराहाँमहाराजस हीहै।इतनाप्रदूषणरामायणमेंघुसादियाहै।उससेक्याफायदाहै?
इसीलिएविकासनहींहोता।सबगोलमोलबातेंहोतीहैंजिनकाशास्त्रमेंकोईसंदर्भभीन हींमिलता।तोशुकदेवगोस्वामीकहतेहैंकिजिसनेसत्यकापरिचयकियाहैउसकेद्वा रासुननाचाहिए।जिससेवास्तविकलाभहो।क्योंकिआपसीतापतिरामचंद्रजीकेविष यमेंबारंबारसुनचुकेहैंइसलिएमैंसंक्षेपमेंइनकार्यकलापोंकावर्णनकरूँगा।कृपयाउसे सुनें।संक्षेपमेंयानिकिछोटेमेंकहदेनासबकुछ।वोभीसुनाने मात्रसे।वोसबजान शकतेथेलेकिनआज हम कुछनहींजान रहे है।भगवानकाएककार्यकलाप, एकसीधीसादीलीलाभीजाननेमेंहमेंतकलीफहोतीहैक्योंकिभगवानहमारेजैसेनहींहैं इसीलिए।भगवानहमारेजैसेरोटीसेबनेहुएशरीरकेनहींहैं।उनकाशरीरआध्यात्मिक होताहै।दिव्यहोताहै।सच्चिदानंदगुणोंसेभराहोताहै।हमाराअसत्,
अचितऔरनिरानंदगुणोंकाशरीरहै।उल्टाहीहै।दिखनेमेंहोताहोगासरीखालेकिनउ

नदोनोंके शरीर केस्वभावअलग
अलगहोतेहैं।तोभगवानकेदिव्यकार्यकलापोंकोहमयेऐसेशरीरवालेकैसेजानें?
उसकेलिएभक्तिकरकेअपनेइसशरीरकीस्वच्छताइत्यादिकरनीहोतीहै।पवित्रता
लानीहोतीहैताकिहमभगवानकीदिव्यताकोसमझसकें।कैसेअपनेपिताकेवचनोंको
स्वीकारा,
जोकेकयीकोदिएथेउनकोबनाएरखनेकेलिएभगवानरामचंद्रजीनेतुरंतराज्यपदछो
ड़दिया।औरअपनीधर्मपत्नीसीतादेवीकेसाथएकजंगलसेदूसरेजंगलमेंअपनेउनच
रणकमलोंसेघूमतेरहेजोइतनेकोमलथेजोसीतादेवीकीहथेलियोंकास्पर्शभीसहनन
हींकरसकतेथे।सीतादेवीतोसेवाकरनेगईंथींभगवानकीऔरभगवाननंगेपांवचलरहे
थे।खड़ाऊँलेकरनहींगएथे।खड़ाऊँतोभरतकोसौंपदिएथे।रामचंद्रजीनेकितनेकष्टउ
ठाएहोंगे।औरइनकेचरणकमल, कमलतोकितनाकोमलहोताहै,
उसकीपंखुड़ियाँकितनीसुंदरहोतीहैंऔरऐसेकमलजैसीउपमावालेभगवानकेचरण
कमलकितनेकोमलहोंगे।तोकांटेपत्थरइत्यादिलगकरक्याक्या
नहींहुआहोगा।तोभक्तिसेहमयहपहचानसकतेहैंकियहकोमलताकाभावहममेंकैसे
आए।जब मांसखाने वाले हैं, नशाबाजीकरते हैं तो
हमारेमेसेकोमलताचलीजातीहै।औरभगवानकेचरित्रकोसमझनेकीताकतहमेंनहीं
मिलती।भगवानकेचरणकमलसीताकीहथेलियोंकास्पर्शसहननहींकरपातेथे,
इतनेकोमलथे।ऐसानहींकि
रामचंद्रजीनेकुछसहननहींकिया।कहनेकामतलबहैकिइनशब्दोंमेंजोभावहैउसभा
वकीमहत्ताभक्तिकेद्वाराआतीहै।यानिकिसीतादेवीकीहथेलियोंयदिश्रीरामचन्द्र
जीकेऐसेकष्टसहनकिएहुएचरणकमलोंकोयदिस्पर्शकरतेतोभगवानकोकाफीसरा

हनाहोनीचाहियेथीकिजोकुछदर्दहैमिटजानाचाहिएथा।सीतादेवीकीहथेलियोंमेंबहुतकोमलताहोतीहैं।लेकिननहींसीताकीसेवाभीबहुतप्रामाणिकरूपसेबनीहै।फिरभीभगवानकीमहत्ताऐसीहैकिअपनेभक्त,
अपनीहीशक्तिसीतादेवीकीहथेलियोंकास्पर्शसहननहींकरपाते।कितनीकोमलताभगवानकेचरणकमलमेंबताईगयीहै।ऐसानहींकिभगवानपुरुषहैंइसलिएकठोरहृदयवालेहैं।नहींनहींभगवानकाप्रेमतोइतनामृदुहोताहैकिवोमाँऔरबापदोनोंकाकामकरतेहैं।सीताजीतोउनकीसेविकाहै।उनकीशक्तिहै।शक्तिहमेशाशक्तिमानकीसेवाकरतीहै।वोस्वतंत्रनहींरहती।चाहेसीतादेवीकितनीभीबलवानक्योंनहोलेकिनउनकीरक्षाकीआवश्यकताबनीरहीथी।औरबनीहीरहनीचाहिए।कोईस्त्रीअपनेमनमानेढंगसेयदिस्वतंत्रबननाचाहतीहैतोवोधर्मकापालननहींकरसकतीऔरनतोधर्मउसकीरक्षाकरसकताहै।तोयेउदाहरणहै।इसलिएसीतादेवीनेकभीधर्मकाउल्लंघननहींकिया।जोलक्ष्मणरेखाबनाईगईथीउसकोलांघकरचलीगईऐसाबतायाहैलेकिनवोतोमायासीताथीं।भगवानकीअंतरंगशक्तिकभीभगवानकेवचनका,
याभगवानकेसंदेशका,
याआदेशकाउल्लंघननहींकरसकती।लेकिनभगवानकीलीलामेंसाथदेनेकेलिएभगवानकीइच्छाकेअनुसारउन्होंनेलक्ष्मणरेखाकोभंगकियाथा।लेकिनउसकीवजहयेहुईकिभगवानअपनेदिव्यकार्यकलापोंकोआगेबढारहेहैं।भगवानकीशक्तिभगवानकीइच्छाकेअनुसारकामकरतीहै।भौतिकशक्तिभीभगवानकीइच्छाकेअनुसारकामकरतीहैअपनीस्वतंत्रइच्छासेनहींकरती।मयाध्यक्षेण------भ गी-
इसभौतिकजगतकीअधिष्ठात्रीदेवीदुर्गाभीभगवानकीइच्छाकेअनुसारकामकररहीहैं।उसकीजिम्मेदारीहैकिमूर्खमनुष्योंकोपीटनाहै।दुखदेनाहै।तीनप्रकारसेदुखदे

तीहै।एकआध्यात्मिकभावसे,
यानिकिखुदकीगलतीसेदुखहोताहै।दूसराकोईसगासंबंधीदेजाताहै।यानिकिदूसरे व्यक्तिकेद्वाराहोताहै।औरतीसराकुदरतीप्रकोपकेद्वारा।तोतीनोंतापत्रिशूलकेस मानहैं।इसलिएदुर्गाकेहाथमेंत्रिशूलहै।शिवजीकेपरिवारकेहाथमेंत्रिशूलहै।दूसरेपरि वारकेहाथमेंत्रिशूलनहींहोता।इनकीजिम्मेदारीहै।भगवानकीइच्छायेहैकिजोदूषित मनुष्यहैंजोअपनाधर्मनहींजानते,
सिर्फधार्मिकताकादिखावाकरतेहैंउनकोकभीऊपरनहींउठनेदेते।त्रिशूलहीपहलेजां चकरताहै।तोभगवानसीतादेवीकीहथेलियोंकास्पर्शभीसहननहींकरपातेथे।भगवा नकेसाथउनकेअनुजलक्ष्मणतथावानरोंकेराजासुग्रीवतथाहनुमानभीथे।वेजंगलमें घूमतेहुए, रामलक्ष्मणकीथकानमिटानेमेंसहायकबने।क्याभगवानथकतेहैंकभी? फिरभीभक्तकाभावहैकिमैंभगवानकीसेवाकरूँऔरथकानमिटाऊं।भगवानकोमैंकै सेराजीकरूं।शूपर्नखाकीनाकतथाकानकाटकर उसे कुरूप बना करभगवानसीतादेवीसेबिछड़गए।भगवानऔरभगवानकीशक्तिदोनोंएकदूसरेसे कभीविलगनहींहोसकती।किसीमेंइतनीताकतनहींकिदेवीसीताकोरामचंद्रजीसेअ लगकरसके।सीतादेवीकाक्रोधइतनाभयंकरहोताहैकिरावणतुरंतहीमरजाता।तोजो दृष्टिसे
हमयहांदेखसकतेहैंकिजिनकोरावणउठाकरलेगयावोअसलीसीतानहोकरमायासी तार्थी।रावणपर
भगवानसकपटकृपाकरतेहैं।उसकीइच्छापूरीकरनेदेतेहैंभगवान।सकपटयानिकु छकपटहोनाचाहिए।कपटपताहैना, cheating. तोमायादेवीकपटकरके रावण की इच्छा पूरी करने के लिएसीतादेवी का

हरणकरसकतेहैं।यानिकिरावणसमझरहाहैकि
सचमुचसीताकोउठाकरलेजारहाहैऔरवोजीतगया।रामचंद्रजीकोविरहमेंऐसेपाग
लबनादेगाऔरलड़नेआएगातोमारकरसीताकाउपभोगकरूँगा।यहीतोइच्छाथी।दु
ष्टोंकीइच्छाक्याहै?
भगवानकीशक्तिलेलूंऔरभगवानकोमारूँ।मानोउसेभगवानकीकृपाशक्तिचाहिए
भगवाननहींचाहिए।ऐसाहीदुष्टविचारकरतेहैं।मेरेघरमेंलक्षमीआएलेकिननाराय
णकीकोईआवश्यकतानहींहै।सहीहैना,
हमरावणहैं।रावणहमारेमेंहीपड़ाहै।हमेंइंद्रिय तृप्तिदेदोऔरभगवानआप side
मेंदेखाकरोहमक्याकरतेहैं।हमविषयभोगकरतेहैंऔरकहतेहैंभगवान Thank you
very much औरदखलमतकरो।ऐसाभावरावणकाहै।रावणजानताहै,
ऐसानहींकिरावणनहींजानता।पहलेभीमरचुकाहैभगवानकेहाथोंसे।यदिसीतादेवी
काइतनाक्रोधहोतातोरावणकबकामरचुकाहोता।परंतुउसनेभगवानकीइच्छाजान
करमायासीताकारूपलेलियाऔरलक्ष्मणरेखाकोभीभंगकरकेरावणकोउठालेजाने
दिया।जिससेभगवानकोउनकादिव्यचरित्रबतानेमेंसंभवहों।उनकोमौकामिलजाए
नहींतोरामायणअधूरीरहती।वोवहींखत्महोजाती।किसीतानेमारदिया।सीतामेंबहु
तताकतहै।लेकिनभगवानकासाथदेरहीहैयेउसकीभक्तिहै।भगवानकीइच्छाकेअ
नुसारभक्तभगवानकाकामकरताहै।अपनीमनमानीनहींकरता।जोभक्तनहींहैवो
अपनीइच्छाआगेरखताहै।भगवानकोसमझतानहींकिभगवानक्याकहरहेहैं।वोयह
नहींसमझताहैतो फिरभगवानकीइच्छाकोकैसेजाने? पोथीपढ़ेजगमुवा,
पंडितभयानकोय। ढाई अक्षरप्रेमकेपढ़ेतोपंडितहोय। तुलसी दास कहेते
है।यानिकिबारबाररामलीलापढ़कर भी

जबहमखत्महोजातेहैंजगमुवायानिकिसाराजगतभीखत्महोगयालेकिनकोईपंडितनहींभया।कोईपंडितनहींभयायानिकिपंडितकौनहोताहै?
जोसत्औरअसत्काविवेकजाननेवालाहोताहै।किपरमसत्यक्याहै, उसकोजाननेवालाहीपंडितहोताहै।आजकलकेपंडिततोकेवलपैसेकेलालचीहैं।वास्तवमेंभगवानकेभक्तनहींहैं।वोरावणहैं।चाहेआपमांसखातेरहो, दारूपीतेरहो, पंडितआएगाऔरकहेगा, अरेबहुतहोगया।रामायणरखोऔर रामायणपढ़ो।हनुमानजीआपकीइच्छापूरीकरेंगे।फिररामायणरखनेदेताहै।अरे, येपंडितनहींहै।भगवानकीकोईसेवानहींहैउसकी।औरनतोवोकिसीकाउद्धारकरसकताहै।भगवान बिछड़गए।भगवानकीशक्तिकभीभगवानसे बिछड़नेवालीनहींहोसकती।लेकिनयहाँभगवानसीतादेवीसेबिछड़गएहैं।तोउसकेपीछेजोभावार्थहैउसकोसमझो।अतएवहीरामचंद्रजीअपनीभौहेंतानकरक्रुद्धहुएऔर सागरकोललकारा।जिसनेभगवान को अपनेऊपरपुलबनानेकीअनुमतिदेदी।तत्पश्चातभगवानरावणकोमारनेकेलिएदावाननकीभाँतिउसकेराज्यमेंप्रविष्टहुए।ऐसेभगवानरामचंद्रहमसबकीरक्षाकरें।येएकहीश्लोकमेंसारासमझायाहै।आगेबहुतसीखनेकेलिएशुकदेवगोस्वामीबतातेहैं।तोहमआपसबसेविनतीकरतेहैंकिसिर्फपाठकेबजायअभ्यासभीकरें।पाठकरनेकाएकफलहोताहैऔरअभ्यासकादूसरा।पाठकरतेशायदपुण्यकमाओगेलेकिनयदिइंद्रियतृप्तिऔरविकास
धार्मिकनियमोंकेअनुसारनकरनेसेजैसेहाथीस्वच्छजलमेंस्नानकरताहैऔरबाहर जमीनपरआकरधूलिफेंकताहैऐसास्नानहोताहै।रामायण का पाठ करें और गलत व्यवहार रामायण के बाद करें। पाठ के बाद हम गलत व्यवहार

करते हैं। हम टाव्युनी गए थे वहाँ हमने लोगों को रामायण के बारे में समझाया, लोग हाँ हाँ करते रहे लेकिन जैसे ही हमने खत्म किया लोग कावा नामक मादक द्रव्य खांडने लगे। फट फट फट फट .....हमने पूछा ये क्या हो रहा है तो कहने लगे की ये तो यहाँ का रीति रिवाज है। हमने कहा काहे का रीति रिवाज है? किसने समझाया? कि ये करने का और वो भी मंदिर में। तो कहने का मतलब कि ये सब दूषण आता है। कोई इस ढंग से समझा जाता है कि करो। कोई दिक्कत नहीं। तब हमने जांच पड़ताल की और हमने ढूंढ निकाला कि कहाँ पे सड़ा है? तो आप ताज्जुब करोगे कि ये स्वयं तुलसी कृत रामायण में नहीं बल्कि ये समझाने वाले के लेखन में निकला। देखो तुलसीदास 1631 में रामायण रच गए। सही न। उसके बाद 1908 में कोई गोपालदास कर के पैदा हुआ यानि कि करीब सौ साल पहले। उसके पिता का नाम पूर्णदास था और वो भोजनगर का रहने वाला था। उसने रामायण का महात्म्य लिखा। उसने बहुत सारी अटपटी बातें बताईं। उसमें ये भी लिखा कि जिस पापी के घर रामायण पड़ी हो चाहे वो मांस खाता हो या शराब पीता हो उसके घर हनुमान जी चौकीदारी करेंगे और यमदूत नहीं आ सकते। ऐसा लिखा है। ये तो धर्म के विरुद्ध है धर्म के क़ानूनों के विरुद्ध है। यानि कि ऐसा लिखने वालेका न तो कोई प्रमाण है न कोई। लेकिन लिख के गया है और यह रामायण महात्म्य मे बताते है। शास्त्र के नियम के अनुसार जब ये शास्त्र रचते है उस से पहले उस का महात्म्य छप जाता है। महात्म्य पहले आता है ओर बाद मे शास्त्र बनता है। पद्म

पुराण, श्रीमद भागवत से पहले लिखा गया । पद्म पुराण मे श्रीमद भागवत का महात्म्य है । वाल्मीकि रामायण का महात्म्य भी अन्य शास्त्रो मे लिखा गया है । सही। लेकिन वो कहेते है की ये वही वाल्मीकि जो त्रेता युग मे हो गए थे कलयुग मे तुलसी दास बन कर आए ओर फिर से दूसरा रामायण करने के लिए । ऐसा लिखा है महात्म्य मे। और वो भी तुलसी दास जी के चले जाने के बाद उसका महात्म्य लिखा। यानि कि तुलसीदास जी से भी ये महात्म्य लिखने वाला ज्यादा अकलमंद होना चाहिए। जो ये गैरंटी देता रहे कि जिस के घर मे मांस पकता है, शराब पीते है, ऐसे पापी के घर मे यदि रामायण पड़ी हो तो, पढता है या नहीं पढता, वो तो बाद कि बात है लेकिन जिस के घर रामायण पड़ी हो उसके के घर हनुमान जी चौकीदारी करेंगे, क्या हनुमान जी नौकर हैं? पापी के घर क्या चोकीदारी करने आते है? यदि भक्त हो तो हम मान भी सकते हैं। पापी कोई भक्त नहीं हो सकता। पापी जब पाप छोड़ कर भगवान के शरणागत होता है तब भगवान उसे स्वीकारते हैं। अपीचेत्सु दुराचारो भजते माम अनन्य भाक.. ये भगवत गीता मे दृष्टि है। इसिलिए जब पाप वृति रहती है और रामायण भी चालू रहता है तो ये जल, रामायण के स्वच्छ जल मे स्नान कर कर हम फिर से विषय वासना कि धुले फेंकते है तो हम गंदे के गंदे ही रहेंगे। भगवान को हम उसकी तरफ पहुँच ही नहीं पाएंगे, तो चौकीदारी कि बात ही क्या? यमदूत नहीं आएंगे तो जाएंगे कहाँ? तो अजामिल कि कहानी उसने लिखी है जो श्रीमद भगवातम मे आती है। तो अजामिल का

वृत्तांत कह कर ये तुलसीदास कि रामायण के लिए भी ऐसा चरित्र निरुपण किया है। कि एक पापी था उसके घर में रामायण पड़ी थी। लेकिन मरते समय उसके यहाँ आए हैं यमदूत उसे ले जाने के लिए। लेकिन तुरंत ही रामायण का प्रभाव उसके घर में था इसलिए विष्णु दूत आए और उसको डांट मारी कि खबरदार यमदूत तुम्हारा अधिकार नहीं है। इसके घर में रामायण पड़ी है। तो वे यमदूत घबरा के अपने मालिक यमराज के पास गए। यमदेवता भी काफी घबराने लगा। ओह, उसके घर मत जाओ। हमें अधिकार नहीं है। उसके घर रामायण पड़ी है। ऐसी महत्ता बताने वाला न तो कुछ धर्म जानता है न ही भक्ति जानता है। यदि जिस धर्म में भक्ति कि छींट भी न हो तो वो धर्म नहीं है। छल धर्म, उपधर्म, विधर्म, कूट धर्म, ये सब कैटव धर्म केहलाते हैं। विशुद्ध शास्त्र में जहां भक्ति का ही निरुपण है, वहाँ ऐसे धर्मों कि बात नहीं आती। उसे तो छोडने को कहा है। भगवद गीता में भगवान अंतिम उपदेश देकर गए अर्जुन को। सर्वधर्मान परित्यज्य मामेकम शरनम व्रज। हे अर्जुन सारी मान्यताओं को छोड़ कर मेरे अकेले कि शरण में आ। जो भगवान कि शरण नहीं देता वो कोई धर्म नहीं है। भगवान का धर्म भगवान की शरण दिलाने वाला ही होना चाहिए। मान्यता का धर्म नहीं है। क्योंकि भगवान गौरंटी देते हैं की सारे पापों से मुक्ति कर देंगे और ये पापी बना रहना चाहता है। तो कैसे बन सकता है। और जहां भगवद गीता खतम हुई वहाँ शुरू होती है श्रीमद भगवतम की धर्मोप्रजित कैटव ..... इस धर्म पुस्तक में सारे कैटव धर्म यानि की cheating religions

जिसको भगवान give up करने को कह रहे है। उनको मारो गोली। यहाँ कुछ नहीं मिलेगा। ऐसा। ये एक विशुद्ध शास्त्र है। जहां सिर्फ भगवान के प्रेम पाने की बात जो मोक्षके बादकी बात है। तो मनुष्य को चार पुरुषार्थ में धार्मिकता का अंत भक्ति में आता है। धर्म के पालन का अर्थ भक्ति करना। भक्ति ही एकमात्र धर्म है। जहां भक्ति नहीं दिखावा है तो कुछ सड़ा ही होगा। उसे दूर करने के लिए भगवान का नाम, यश, कीर्तन इत्यादि करना चाहिए। इसलिए, बोलो दिल खोल के, हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे, हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। इसमें कोई खर्चा हुआ? कुछ नहीं हुआ। लेकिन भक्ति की शुरुआत हो जाएगी। लेकिन नियमित रूप से आप माला करो। एक बार जो भगवान का नाम लेता है वो पापी भी वैष्णव कहलाता है। लेकिन सच्चा वैष्णव नहीं झूठा वैष्णव कहलाता है। वैष्णव प्रायः तो पाप छोड़ देता है फिर भी भगवान का नाम नहीं लेता है तो भगवान से ईर्ष्या चालू रहती है। लेकिन जो नियमित रूप से नाम लेता है वो आदर्श बन सकता है। नियम, यानि की मर्यादा। संकल्प और नियम दोनों साथ साथ में ऐसा काम करता है जो बुद्धि का विषय है। मनोधर्म का विषय नहीं है। हमें बुद्धि का उपयोग करना है। तो, बुद्धि से यदि हम संकल्प करें और रोज़ हम चार माला से शुरुआत करेंगे हरे कृष्ण महामंत्र का जप करेंगे और अपनी भक्ति आगे बढ़ाने का प्रयत्न करेंगे। बोलो मंजूर है? तब हम इतने दूरसे भी बारंबार आया करेंगे। और आगे आगे सारी रामायण खतम करेंगे। लेकिन एक श्लोक में यदि हम इतना समय लेते हैं तो नौ दिन तो हमें बहुत कम

पड़ेंगे। लेकिन कहा है। नष्टप्रायेशु अभद्रेशु नित्यं भागवत सेवया। जो नित्यं भागवत , भगवान का पुस्तक भागवत या रामायण या भक्तों की नित्या सेवा करता है तो भगवती उत्तम श्लोके, भक्तिर भवति नैष्ठिकी। भगवान की कृष्ण या रामचंद्र दोनों में कोई अंतर नहीं। उसमे नैष्ठिकी भक्ति पैदा होगी। नैष्ठिकी यानि ये भक्ति कभी गिराने वाली नहीं है। निष्ठा पूर्वक हम आगे बढ़ कर हम भगवादधाम पहुँचने के लिए हम सक्षम बनते हैं। नित्यं भागवत सेवया। हर रोज कम से कम आप लोग चार माला से शुरू करो। करेंगे? क्या विचार है? हमें वापस बुलाना है? माता जी अरे आप तो बोलती ही नहीं कोई। अरे जबर्दस्ती से कोई बुलाता है? हम जबर्दस्ती नहीं करते लेकिन स्पष्ट बात करते हैं। हम भगवान को राजी करने का प्रयत्न करते हैं। क्योंकि भक्ति में तो भगवान को राजी ही करना है। एक को यदि राजी कर लो तो सारी दुनिया राजी हो जाएगी। एक को संतोष दो तो सारी दुनिया को संतोष हो जाएगा। एक को भी नहीं कर सकते तो किसको करेंगे। किसी को नहीं कर पाते। लेकिन एक मुख्य जो हैं भगवान, जिसके लिए अपना जीवन बना है , हर एक जीव भगवान का अंश है। तो जीवन उनसे है तो पहली ज़िम्मेदारी भगवान को राजी करने की है। बच्चा पैदा होता है तो माँ बाप उसको जब बाहर निकालते हैं तो सर्वप्रथम भगवान के दर्शन को ले आते हैं। क्योंकि उसका है उसकी अमानत है भूल जाये तो ये उसकी बेवकूफी है। ये नाता कभी भुलाया नहीं जा सकता। आप सभी धार्मिक पुरुष हैं, लेकिन इन धार्मिक नियमों का पालन कर के हम

अपनी भक्ति को आगे बढ़ाने का प्रयत्न करें। एक एक अकेले अकेले नहीं कर पाएंगे। लेकिन समूह में ही कर सकते हैं। जैसे यहाँ समूह में कितना बढ़िया आयोजन किया है। यहाँ एकत्र मिल कर इतने कोने में भी भक्ति का भाव बताते हैं लेकिन बताना और वास्तविक प्रगति करने में बहुत अंतर होता है। हम यहाँ बैठे बैठे भी भगवान के पास पाहुच सकते हैं। भारत ही जाना है ऐसा नहीं है। तो भक्ति का जो उपाय है उसको आप अपनाओ और हरे कृष्ण महामंत्र कम से कम चार माला से शुरू करो। हम कम से कम सोलह माला तक लोगों को उत्साह देते हैं क्योंकि बाकी के आठ घंटे देखो कितने भगवान की याद में जाएँगे। तो ये दस घंटे का हिसाब बाकी चोदह घंटे आपका । लेकिन इससे जीवन सफल बन जाएगा। तो कंजूस मत रहिए। दिल खोल कर भगवान का नाम लेने के लिए आप तैयारी कीजिये। आपने माला दी है इन लोगों को? अरे बाप रे! आप प्रेसिडेंट साहब को पूछ रहे हैं? कंजूस मत रहिए। माला दो। तो वो भी कंजूस नहीं रहेंगे भगवान का नाम लेने में। सही न। तो कितने लोग माला करते हैं? हाथ को ऊंचा करो , अरे वाह ! ये तो छुपे रुस्तम हैं सभी एक, दो, तीन चार...। भाइयों नाक कटेगी जरा हाथ तो ऊंचा करो। चलो कितने करेंगे? अभी हाथ ऊंचा करो। वाह एक, दो,..... और कितने करेंगे भगवान के नाम का जप? एक, दो,..... चलेचलो। सब कंजूस हैं। क्यों? क्या खर्चा हो जाएगा? हमें कुछ नहीं चाहिए। हम सामने से दे सकते हैं। लेकिन भगवान के नाम के लिए ही देंगे। भगवान नहीं चाहिए?